शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321-9645

विश्व स्नेह समाज

वर्ष 19, अंक 04, जनवरी 2020

एक रचनात्मक क्रान्ति

पृथ्वी पर बढ़ते प्रदूषण नियंत्रण का दायित्व

शिक्षा अनैतिक हो गई हुआ अनैतिक देश

मूल्यः 15/-रू

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र में: कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), स्व. किशोरी लाल सम्मान (श्रृंगार रस की एक रचना पर), महादेवी वर्मा सम्मान (छायावादी रचना पर) गद्य के क्षेत्र मेंः डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान (नाटक) उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान (कहॉनी/उपन्यास/लघु कथा) हिन्दी सेवी सम्मान-ऐसे व्यक्ति जो किसी भी प्रकार से हिन्दी सेवा कर रहे हों अथवा हिन्दी का प्रचार/प्रसार, हिन्दी के विकास के लिए कार्य कर रहे हों। समाज सेवा के क्षेत्र मेंः समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान-ऐसे व्यक्ति जो कम से कम गत 5 वर्षों से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान दे रहे है. कलाश्रीः (कला/संस्कृति/लोकनृत्य/शास्त्रीय संगीत/अभिनय/संगीत/पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी अन्य क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) (युवाओं की उम्र 35 वर्ष से कम हो) विशेषः 1. प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और 150 रुपये मात्र का धनादेश/डाक टिकट आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. 2. रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. ३. निर्णायक मण्डल का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा. किसी प्रकार के विवाद के सदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

अंतिम तिथिः 15 फरवरी 2020

अध्यक्ष,

श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास

65ए/2, लक्सों कंपनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड,

धूमनगंज, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.,

मो०: 09335155949, ईमेल-psdiit@rediffmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः19, अंकः 04
जनवरी : 2020

इस अंक में......

पृथ्वी पर बढ़ते प्रदूषण नियंत्रण का दायित्व.......07

कैसा होगा भारतीय हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य ...10

पहले धनकूबेरों कें विज्ञापन प्रथम पृष्ठ पर छापना अखबार के प्रकाशकों को गवारा नही था, क्योंकि तब अखबार, पत्र-पत्रिकाएं बिकाऊ नहीं अपितु मिशनरीज थे. मगर आज के दौर में ऐसी पत्र-पत्रिकाओं को कारोबारी मुखर्ता के सिवाय और कुछ नही मानेगें.

सी.बी.आई की साख पर सवाल...................... 13
आदि कवि महर्षि वाल्मीकि 15

स्थायी स्तम्भ
अपनी बातः शिक्षा अनैतिक हो गई, हुआ अनैतिक देश 04
प्रेरक प्रसंग 05
सोसल मीडिया से.... .....०६
अध्यात्मःविकारों से मुक्ति द्वारा ही संभव है.... .....१४
कविताए/गीत/ग़ज़लः डॉ० नीता अग्रवाल, सुधा मिश्रा, देवेन्द्र कुमार मिश्र, जगन्नाथ विश्व, डॉ० जयसिंह अलवरी, रामचरण यादव, पं. मुकेश चतुर्वेदी 'समीर', नाजु हातीकाकोती, अखिलेश निगम 'अखिल', ...17—19
समाज : मायके के दखल से 20
कहानीः सीमा की सीमा-पूनम रानी शर्मा, नया घर-पुष्पा मिश्रा.....21, 27
साहित्य समाचार, ...23, 24,31
लघु कथाएंः सुखवर्ष कंवर 'तन्हा', शबनम शर्मा, अशरफ कादरी, डॉ. सुरज मृदुल ....25—26
स्वास्थ्यः भारत में आर्थोराइटिस की बढ़ती समस्याएं........................29
समीक्षाः आओ शिखर की ओर 34

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.—93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011 का0: 09335155949
ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन—विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/

2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन—जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद—विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

शिक्षा अनैतिक हो गई, हुआ अनैतिक देश

विश्व में जितने भी जीव जन्तु है, उनमें मानव नामक प्राणर ही एक ऐसा प्राणि है जिसमें सभ्यता, संस्कृति और संस्कार पाया जाता है. विश्व के तमाम देशों में भारत ही एक ऐसा देश था जिसमें सभ्यता, संस्कृति और संस्कार की बहुलता रही है. इसी कारण इसे कभी विश्व गुरु, सोने की चिड़िया आदि नामों से विश्व में जाना जाता रहा है. इसमें हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली का बहुत बड़ा योगदान रहा है. एक नवजात शिशु में शिक्षा, नैतिकता, संस्कार का पाठ पढ़ाने का काम महिलाओं (माँ) से प्रारम्भ होता था. बाद में यह कार्य दादी, ताई, चाची, बुआ, नानी, मामी और फिर दादा, नाना, ताऊ, चाचा, मामा का संस्कारिक अंश समाहित होता था. बाल्यवस्था में इन तमाम पारिवारिक सदस्यों की शिक्षा के उपरान्त बालक गुरुकुल में प्रवेश लेता था. गुरुकुल में पारिवारिक सदस्यों की शिक्षा के उपरान्त बालक परिवार में शामिल होता था और तमाम तरह की पारिवारिक शिक्षाओं को सीखते-सीखते प्रौढ़ावस्था को पार करता था फिर वृद्धावस्था में अपने द्वारा अर्जित शिक्षा को नई पीढ़ी, समाज को भी शिक्षित करने का कार्य करता था और धीरे-धीरे शिक्षा ग्रहण करते, सीखाते प्रकृति की गोद में समाहित हो जाता था.

नैतिकता/संस्कार का पाठ पढ़ाने में मातृ पक्ष की बेहद अहम भूमिका होती है. आज भी होनी चाहिए थी, मगर धीरे-धीरे मातृपक्ष अपने नवजात शिशु को नैतिकता का पाठ पढ़ाने में विफल होता गया. संयुक्त परिवार धीरे-धीरे विखंडित होकर एकल परिवार की ओर बढ़ने लगे. दादी, बुआ, चाची, ताई, दादा, ताऊ, चाचा आदि नाम मात्र के रिश्ते होकर रह गये. मातृपक्ष थोड़ा बहुत पढ़ लिखकर या तो टी.वी. की कोल कल्पित धारावाहिकों में डूबने लगा या मोबाइल की दुनिया में रसाबोर हो गया. उसके पास नवजात में संस्कार या शिक्षा देने का समय ही नहीं बचा. कुछ महिलाएं नौकरी पेशे में भी प्रवेश कर गई, जिससे इसमें और कमी आती गई.

बालक गुरुकुल के बजाय शुद्ध व्यवसायिक, धनलोलुप, कथित शिक्षा के मंदिरों में अध्ययन करने लगे. जहाँ धन वसूलने के सिवा कोई शिक्षा और संस्कार नहीं दिए जाते. विद्यालय के व्यवस्थापक सिर्फ पैसा वसूलने में लगे रहने लगे और शिक्षक, शिक्षा को कर्त्तव्य न मानकर सिर्फ समय पास करने लगे. धीरे-धीरे यह प्रणाली प्राथमिक से होते-होते, उच्च्व प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च्व शिक्षण संस्थानों की परिपाटी बन गई. शिक्षा के मंदिर धीरे-धीरे शिक्षा के मकान हो गये.

बच्चा अब शिक्षा ग्रहण करने के लिए नहीं बल्कि कागज खरीदने के लिए इन शिक्षा के मकानों में जाता है. कागजों का ढ़ेर इकट्ठा करने के बाद जब नौकरी नहीं पाता, कोई सफल व्यवसाय करने के लायक अपने आपको नहीं पाता तो उसके अंदर धीरे-धीरे विकृति पैदा होने लगती है. यह विकृति उसे बलात्कार, नशाखोरी, चोरी, डकैती, मर्डर, राहजनी सहित तमाम अनैतिक एवं असामाजिक कार्यो को करने के लिए उत्प्रेरित करती है.

इस विकृति/अनैतिकता में हमारे देश की समय-समय पर सत्तासीन होने वाली राजनैतिक पार्टियों ने और महति भूमिका अदा की. उनका ध्येय ही होता है कि हमारे देश का युवा नैतिक और शिक्षित न बने. क्योंकि जब देश के नवजवान नैतिक एवं शिक्षित बन जाएगें तो इनकी रैलियों में जिंदाबाद, मुर्दाबाद के नारे कौन लगाएगा. इनके स्वार्थपरक दंगो को कौन अंजाम देगा. इन सत्तासीन नेताओं का ध्यान कभी शिक्षा के गुणात्मक सुधार एवं नैतिकता

की ओर कभी गया ही नहीं. अनपढ़, जाहिल, बलात्कारी शिक्षा मंत्री बनने लगे, शिक्षा के लिए कानून बनाने लगे तो स्वभाविक है ये अपनी सोच के अनुकूल ही नीति बनायेगें.

आज देश में बलात्कार की जो विभत्स घटनाएं तीन साल की बच्ची के साथ, ६ साल की बच्ची के साथ, ७० साल की बुढ़ी महिला के साथ........ बाद में पहचाने या पकड़े जाने के डर से मार देना, जला देना, क्रूरता की हदे पार कर देने जैसी घटनाएं प्रत्येक दिन सोसल मीडिया, अखबारों के प्रथम पृष्ठ का आकर्षण, इलेक्ट्रानिक मीडिया का ब्रेकिंग न्यूज बनने लगी है. ऐसी घटनाओं पर कैंडल मार्च, जुलूस, सोसल मीडिया पर अनावश्यक वाद-विवाद करने से कुछ नहीं होने वाला. जरुरत है जननी, मातृपक्ष को आगे आने की, शिक्षकों द्वारा बालकों को नैतिक शिक्षा देने की, फिर शिक्षा के मकानों में भी नैतिक शिक्षा पर बल देने की. सरकारों को भी इसे अनिवार्य रूप से शिक्षा शामिल करने के लिए कड़ा कानून बनाने की. कुछ सजग और शिक्षित हमें और आपको भी होना पड़ेगा. जब भी किसी महिला/बच्ची को मूसीबत में देखे, या मूसीबत में पड़ने की सम्भावना नज़र आये थोड़ा सा अपने व्यस्त समय में से कुछ समय निकालकर पीड़िता या संभावित पीड़िता का यथा सम्भव सहयोग करने की. आप लड़िए मत, कम से कम पुलिस को सूचित तो कर सकते है न.

शिक्षा अनैतिक हो गई, हुआ अनैतिक देश
बिना नैतिकता के, कैसे बने सुंदर परिवेश।।

संपादक

1996 से त्रैमासिक एवं 2001 से निरन्तर प्रकाशित

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक

एक प्रति–15/रुपये, वार्षिक–150/रुपये,
पंचवर्षीय–700/रुपये, आजीवन–2100/रुपये, संरक्षकः 11000/रुपये

खाता धारक– विश्व स्नेह समाज, **बैंक का नामः** विजया बैंक, **खाता संख्या**–718200300000104, **आईएफएससी कोड**–वीजेबी0007182 सीधे खाते में जमा करें और जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या ह्वाट्सएप कर देवें।

पताः एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद–211011, मो0: 9335155949, ई–मेलः
vsnehsamaj@rediffmail.com

प्रेरक प्रसंग

अमृतवचन

विहाय कामान्यः सर्वान्युमांश्चरति निःस्पृह।
निमंमो निरहंकारः सशांतिमधिगच्छति।।
सुभाषितरसास्वादः प्रौढास्वसिडमस्तथा।
सेवा विवेकिना राजः यनिर्मूलं त्रयम।।
समावान प्रवेष्ठ वकतव्या वासमनजसम्।
अब्रवन विब्रुवन्वापि नरः किल्विषभाग भवेत।।

अर्थात-जो मनुष्य सम्पूर्ण कामनाओ का त्यागकर ममता रहित, लोभ अहंकार स्पृहा रहित है, वही परम शांति को प्राप्त करता है.

रतिकुशल प्रोढ़ स्त्री आनन्दमय समागम में रत्त, दयाशील, विवेकी, न्यायनिष्ठ प्रमाणिक जीवात्मा की सेवा यह तनि कर्म दुःख निवारक श्रेष्ठ सुख के कारक हैं। मनुष्य किसी समा-अनुष्ठान, प्रयोजन में सम्मिलित न हो अनुचित वक्तव्य दे, अनुचित अन्यायपूर्ण तर्क विर्तक में मौन धारण करें वह मनुष्य नरक का भागी होता है. असंतुष्टी का भाव उत्पन्न करने वाला अहंकारी होता है. बिना सद्गुण के किसी व्यक्ति को यश-सम्मान नही मिलता, सद्गुण पर सभी नस्मस्तक होते है.

कबीर तन जात है, सकै तो राखु बहोरी,
खाली हाथ सब गये, जिनके हाथ कटोरी।

इस नाशवान देह से जो पुण्य कर्म हो सके करलें, वह परलोक में संग्रह होता है, शेष कुछ भी मृत्युर्पयांत साथ नही जाता, मृत्यु काल में यह शरीर भी यहीं छूट जाता है, इस जगत में जिसके पास लाखों-करोड़ों की सम्पत्ति है, वे भी अंततः खाली हाथ ही जायेगें.

इच्छा दुःख, दुःख भय, का कारक है, इच्छा नही तो फिर दुःख भय कैसा? इच्छा से मुक्ति ही सार्थक जीवन है. परमार्थ वह नाव है, जो मृत्युपयति आत्मा को भवसागर पार उतार देता है. जो व्यक्ति संध्या और अग्निहोत्र (हवन) नही करते वे द्विज कर्म के योग्य ही नही है, ढोंग-पाखण्ड से परमेश्वर का अशीर्वाद प्राप्त करना संभव ही नही है." अज्ञानी मनुष्य जन्मांध छिद्रयुक्त नांव पर सवार होकर पार उतरना चाहता है, किनारे पर पहुंचने से पहले ही डूब जाता है.'

-डॉ0 अरुण कुमार आनन्द,
चन्दौसी, संभल उ0प्र0

पृथ्वी पर बढ़ते प्रदूषण नियंत्रण का दायित्व

वैश्विक स्तर पर मात्र 31 प्रतिशत क्षेत्र वनों से आच्छादित है, जबकि 36 करोड़ एकड़ वन क्षेत्र प्रतिवर्ष घट रहा है. नतीजन 1141 प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है. वहीं जंगलों पर निर्भर 1.6 अरब लोगों की आजीविका खतरे में है.

-प्रदीपक कुमार सिंह
लखनऊ, उ०प्र०

राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस प्रत्येक वर्ष भारत में 2 दिसम्बर को मनाया जाता है. यह दिवस उन लोगों की याद में मनाया जाता है, जिन्होंने भोपाल गैस त्रासदी में अपनी जान गँवा दी थी. उन मृतकों को सम्मान देने और याद करने के लिये भारत में हर वर्ष इस दिवस को मनाया जाता है. भोपाल गैस त्रासदी वर्ष 1984 में 2 और 3 दिसंबर की रात में शहर में स्थित यूनियन कार्बाइड के रासायनिक संयंत्र से जहरीला रसायन, जिसे मिथाइल आइसोसाइनेट (एमआईसी) के रूप में जाना जाता है, के साथ-साथ अन्य रसायनों के रिसाव के कारण हुई थी. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा ये घोषित किया गया कि गैस त्रासदी से संबंधित लगभग 3,787 लोगों की मृत्यु हुई थी. अगले 72 घंटों में लगभग 8,000—10,000 के आसपास लोगों की मौत हुई, वहीं बाद में गैस त्रासदी से संबंधित बीमारियों के कारण लगभग 25,000 लोगों की मौत हो गयी. ये पूरे विश्व में इतिहास की सबसे बड़ी औद्योगिक प्रदूषण आपदा के रूप में जाना गया.

इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य औद्योगिक आपदा के प्रबंधन और नियंत्रण के लिए जागरूकता फैलाना तथा प्रदूषण रोकने के लिए प्रयास करना है. इस त्रासदी में जान गवाने वाले लोगों के लिए विशेष श्रद्धांजलि सभा आयोजित की जाती है. इसके साथ ही इस दिन गैर सरकारी संगठनों, सिविल सोसायटी और नागरिकों द्वारा प्रदूषण को रोकने के लिए संगोष्ठी, भाषण जैसे कई सारे कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं. राष्ट्रीय प्रदूषण दिवस को देखते हुए प्रदूषण नियंत्रण की देखरेख करने वाली संस्था भारतीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए इस मौके पर 2 दिसबंर के दिन भोपाल, कानपुर, दिल्ली और मुबंई जैसे शहरों में जन-जागरूकता रैली निकाली जाती है. जिसमें लोगो को बढ़ते प्रदूषण और प्रतिकूल प्रभावों के प्रति आगाह किया जाता है. इस दिन जन जागरूकता रैली निकालना काफी महत्वपूर्ण इसलिए भी है क्योंकि विश्व के सबसे प्रदूषित शहरों की सूची में भारत के 14 शहर शामिल है.

इस रैली में लोगों को बढ़ते प्रदूषण के कारण पर्यावरण में हो रहे जलवायु परिवर्तन और पृथ्वी के बढ़ते तापमान जैसे विषयों के बारे में बताया जाता है तथा इस बात पर चर्चा की जाती है कि कैसे छोटे-छोटे उपायों को अपनाकर हम प्रदूषण को रोकने में अपना अहम योगदान दे सकते है. इस लेख के द्वारा हम विश्व तथा देश के कुछ पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य कर रही हस्तियों के जिक्र करना चाहेंगे ताकि उनसे प्रेरणा लेकर हम अपने आसपास प्रदूषण नियंत्रण की दिशा में यथाशक्ति अपना-अपना योगदान कर सके.

सुश्री गौरा देवी के नेतृत्व में उत्तराखंड के जंगलों को वन माफिया से बचाने के लिए 1970 की शुरूआत में गढ़वाल के ग्रामीणों ने अहिंसात्मक तरीके से एक अनूठी पहल करते हुए पेड़ों से चिपककर हजारों-हजार पेड़ों को कटने से बचाया. यह अनूठा आंदोलन 'चिपको आंदोलन' नाम से प्रसिद्ध हुआ था. यह आंदोलन वर्तमान उत्तराखंड के चमोली जिले के हेंवलघाटी से गौरा देवी के नेतृत्व में शुरू होकर टिहरी से लेकर उत्तर प्रदेश के कई गांवों में इस कदर फैला कि इसने वन माफिया की नींद उड़ा दी. श्री सुन्दरलाल बहुगुणा प्रसिद्ध पर्यावरणविद्, चिपको आन्दोलन के प्रमुख नेता थे. इन्हें सन 1984 के राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया था. चिपको आन्दोलन के कारण वे विश्व भर में वृक्षमित्र के नाम से प्रसिद्ध हो गए. श्री सुंदरलाल बहुगुणा 'पर्यावरण गांधी' के नाम से भी जाने जाते है. चिपको आंदोलन की सफलता के बाद पर्यावरण की रक्षा के लिए सुंदरलाल बहुगुणा ने टिहरी बांध के विरोध में अपने स्वर बुलंद कर दिये थे.

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित सुश्री वंगारी मथाई केन्याई पर्यावरणविद् और राजनीतिक कार्यकर्ता थी. यह महिला अधिकारों के लिए लड़ने वाली महान महिला के रूप में प्रसिद्ध है. उन्होंने

अमेरिका और कीनिया में उच्च शिक्षा अर्जित की. 1970 के दशक में मथाई ने ग्रीन बेल्ट आंदोलन नामक गैर सरकारी संगठन की नींव डालकर पौधारोपण, पर्यावरण संरक्षण और महिलाओं के अधिकारों की ओर ध्यान दिलाया.

सुश्री मेधा पाटकर एक भारतीय पर्यावरणविद्, सामाजिक कार्यकर्ता तथा समाज सुधारक है. मेधा पाटकर नर्मदा बचाओ आंदोलन की संस्थापक के नाम से भी जानी जाती है. श्रीमती मेनका गांधी प्रसिद्ध राजनेत्री, जानी-मानी पर्यावरणवादी एवं पशु-अधिकारवादी हैं. उन्होंने अनेकों पुस्तकों की रचना की है तथा उनके लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः आते रहते है. वह भारत की एक अनुभवी सांसद है तथा केन्द्रीय सरकार में महिला एवं बाल विकास मंत्री रह चुकी है. भारत में पशु-अधिकारों के प्रश्न को मुख्यधारा में लाने का श्रेय श्रीमती मेनका गांधी को ही जाता है.

विश्व-विख्यात पर्यावरणविद् एवं नवधान्य की संस्थापक-निदेशक, डा. वंदना शिवा जैविक खेती पर ज्यादा जोर देती हैं और देश भर के किसानों को जागरूक कर रही हैं. देहरादून में जन्मीं 58 साल की डा. वंदना शिवा ने पर्यावरण पर दो दर्जन किताबें लिखी हैं. 1970 में वंदना शिवा चिपको आंदोलन से जुड़ी थी. उसके बाद तो पर्यावरण संरक्षण की लड़ाई और वंदना शिवा एक दूसरे के पर्याय बन गए. डा. वंदना को भारत में कई जैविक अभियान शुरू करने का श्रेय जाता है. वंदना ने नेटिव सीड्स (मूल बीज) को बचाने और जैविक कृषि को प्रोत्साहित करने dsfy, o"kZ 1987 में नवधान्य नामक संगठन की स्थापना की थी.

सुश्री सुनीता नारायण भारत की प्रसिद्ध पर्यावरणविद् है. सुनीता नारायण सन 1982 से विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र से जुड़ी हैं. वर्तमान में वह केंद्र की निदेशक हैं. वे पर्यावरण संचार समाज की निदेशक भी है. वे डाउन टू अर्थ नाम की एक अंग्रेजी पत्रिका भी प्रकाशित करती हैं जो पर्यावरण पर केंद्रित है.

ग्रीन मैन के नाम से विख्यात हरित ऋषि श्री विजय पाल बघेल का मानना है कि पर्यावरण और जीवन का अनोखा संबंध है. पर्यावरण का ध्यान रखना हर किसी की जिम्मेदारी और अधिकार होना चाहिए. विशेषकर आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्यावरण संरक्षण बहुत जरूरी है. पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया हुआ है. वह अपने जीवन में अब तक देश और दुनिया में पांच करोड़ से अधिक पेड़ लगाकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज करा चुके हैं.

श्री चंडीप्रसाद भट्ट भारत के गांधीवादी, पर्यावरणवादी और सामाजिक कार्यकर्ता हैं. उन्होंने सन् 1964 में उत्तराखण्ड के गोपेश्वर में दशोली ग्राम स्वराज्य संघ की स्थापना की जो कालान्तर में चिपको आंदोलन की मातृ-संस्था बनी.

प्रसिद्ध पर्यावरणविद् डा. सौम्या दत्ता का नाम देश के अलग-अलग हिस्सों में विनाशकारी परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का विरोध करने वालों की अग्रिम पंक्ति में आता है. पर्यावरणविद् डा. रविकान्त पाठक वर्तमान में स्वीडन की गोथम्बर्ग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर के रूप में जलवायु परिवर्तन तथा वायुमण्डलीय विषय पर गहन रिसर्च कर रहे हैं. आपने महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरणा लेकर भारत उदय मिशन का गठन किया और इसके माध्यम से ग्रामीण विकास के लिए 2007 से ही सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं.

भारतीय किशोरी युगरत्ना श्रीवास्तव ने संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्मेलन के माध्यम से दुनिया के दो अरब पचास करोड़ से अधिक बच्चों के साथ ही आगे जन्म लेने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के लिए विश्व के राजनेताओं से पूछ ही लिया कि ''ये कैसा इंसाफ है कि हमें धरती अच्छी हालत में मिले लेकिन हम उसे आने वाली पीढ़ी के लिए खराब हालत में दें?'' युगरत्ना ने आगे कहा कि ''अगर धरती पर रहने लायक पर्यावरण ही न रहेगा तो धन, दौलत व तमाम सम्पत्तियाँ धरी की धरी

रह जायेगी." युगरत्ना ने धरती को बचाने के लिए दुनिया के लोगों से ऐसे कुछ कदम उठाने की अपील की है जिसका फायदा भावी पीढ़ी तक भी पहुँचे. स्वीडन की बेटी ग्रेटा थनबर्ग ने ग्लोबल वर्मिंग के प्रति यूएन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में सारे विश्व को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से सचेत किया है.

विश्वविख्यात पर्यावरण विशेषज्ञ श्रीमती जेन गुडौल ने चेतावनी दी है कि यदि दुनिया के निवासियों ने एकजुट होकर पर्यावरण को बचाने का प्रभावशाली प्रयत्न नहीं किया तो जलवायु में भारी बदलाव के परिणामस्वरूप 21वीं सदी के अन्त तक छः अरब व्यक्ति मारे जायेंगे. संसार की एक महान पर्यावरण विशेषज्ञ की इस भविष्यवाणी को मानव जाति को हलके से नहीं लेना चाहिए. यह गम्भीर भविष्यवाणी मानव जाति के अस्तित्व को बचाने के लिए समय रहते ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ाने वाले कारणों जिसमें परमाणु बमों के विस्फोट भी एक प्रमुख कारण हैं, को नियंत्रित करने के लिए प्रभावशाली कदम उठाने के लिए प्रेरित करती है. आज ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी की सतह का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है किन्तु विडम्बना यह है कि हम ग्लोबल वार्मिंग के खतरों को भली भांति जानते हुए भी लापरवाही बरत रहे हैं और सबसे ज्यादा गैर जिम्मेदारी तो वह देश दिखा रहे हैं जिनकी ग्लोबल वार्मिग में सर्वाधिक हिस्सेदारी है.

भारत ही विश्व में एकता तथा शान्ति स्थापित करेगा. हमारा मानना है कि युद्धों तथा आतंकवाद से धरती को बचाने के लिए भारत को अपनी संस्कृति के आदर्श वसुधैव कुटुम्बकम् तथा भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 के अनुरूप एक वैश्विक लोकतांत्रिक व्यवस्था (विश्व संसद) गठित करने लिए सभी देशों के राष्ट्राध्यक्षों की बैठक शीघ्र बुलानी चाहिए. साथ ही मानव निर्मित तथा प्राकृतिक अपदाओं से सामाजिक सुरक्षा प्रत्येक वोटर को प्रदान करने के लिए वोटरशिप अधिकार कानून की अविलम्ब आवश्यकता है! वोटरशिप कानून के अन्तर्गत प्रत्येक वोटर को उसके हिस्से की आधी धनराशि उसके खाते में भेजने की मुहिम विश्व परिवर्तन मिशन के संस्थापक विश्वात्मा भरत गांधी द्वारा देश में जोरदार तरीके से चलाया जा रहा है. भारत सरकार को उनके द्वारा भारतीय संसद में दायर याचिका पर चर्चा करवानी चाहिए.

सोसल मीडिया वाल से

भैंस का घंटा

चोर बहुत चालाक होते हैं, जब वो भैंस चुराते हैं तो सबसे पहले वो भैंस के गले से घंटे को खोलते है. फिर एक चोर घंटा बजाते हुए पश्चिम की ओर भागता है और बाकी चोर भैंस को पूर्व की ओर ले जाते हैं. गांव के लोग घंटे की आवाज सुन कर पश्चिम की ओर भागते हैं, और आगे जाकर चोर घंटे को फेक कर भाग जाता है. इसलिए गांव वालों के हाथों में सिर्फ घंटा ही आता है और चोर भैंस चुरा ले जाते हैं.

हमारी भैंस : बैंक, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, परिवहन व्यवस्था, कानून-व्यवस्था, भ्रष्टाचार, पीने योग्य पानी, किसान, रक्षा, प्रदूषण रहित जैसे और कई अनगिनत मुख्य मुद्दे हैं.

भैंस का घंटा : पुलवामा, तीन तलाक, मंदिर-मस्जिद, हिन्दू-मुस्लिम, दलित-सवर्ण, बिहारी-गुजराती, नेहरू-पटेल, हरा-भगवा, पाकिस्तान-चीन.

ये सिर्फ भैंस की कहानी ही है. सोचा सुना दूं.

तबियत मस्त रहेगी

एक बार एक उदास बंदर मरने को गया तो जाते-जाते उसने सोते हुए शेर के कान खींच लिये.

शेर उठा और गुस्से में दहाड़ा-'किसने किया ये? किसने अपनी मौत बुलायी है?'

बंदर : मैं हूं महाराज.

शेर ने पूछा : 'ये करते हुए तुम्हें किसी ने देखा....?'

बंदर : नहीं महाराज....

शेर : ठीक है, एक बार और करो अच्छा लगता है....

सार :

अकेले रह-रह कर जंगल का राजा भी बोर हो जाता है. इसलिए अपने दोस्तों के संपर्क में रहें, कान खिंचते रहे, उँगली करते रहे..

सुस्त न रहे....मस्ती करते रहें....

दोस्तों से रिश्ता रखा करो जनाब तबियत मस्त रहेगी.
ये वो डॉक्टर हैं जो बातों से इलाज कर दिया करते है.

कैसा होगा भारतीय हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य

■ महज विकाऊ और विज्ञापन हो गए हैं.

-डॉ० अरुण कुमार आनन्द,
चन्दौसी, संभल, उ०प्र०

लेकप्रियता के मामले में इलेक्ट्रानिक मीडिया के वर्चस्व के कारण लगातार पिछड़ने जाने की कुंठा से आहत होकर, इससे उबरने की छट-पटाहट में कई बड़े दैनिक अखबार और पत्र-पत्रिकाएं अब अपने को ढोने पर विवस हैं. मगर ऐसे किसी ऊंचे-प्रभावी अखबार ने कभी भी अपने पाठकों से यह पूछने की जारूरत नहीं समझी कि पूरा प्रथम पृष्ठ व पिछला आवरण पृष्ठ के साथ-साथ भीतरी पृष्ठ भी विज्ञापन दाता के हवाले करके राष्ट्रीय खबरों को लोकल न्यूज की तरह समेट देना उन्हें ठीक लगता है या नहीं? आज दैनिक अखबारों और प्रतिष्ठ पत्र -पत्रिकाओं में समाचार या रचनाएं कम विज्ञापन ज्यादा सुर्खियों में छापे जाते हैं. पत्रकारिता को महज बिकाऊ और धनोपार्जन का उद्योग धंधा बना दिया है. क्या यह मिशनरी पत्रकारिता में उचित है? पिछले दिनों हमने जब एक ख्याति प्राप्त दैनिक अखबार के प्रति यह आरोप लगाया था कि अमुक अखबार केवल कटींग न्यूज और पेड न्यूज छापता है, पूरे हिन्दुस्तान के अखबारों में हड़कम्प मच गया था, अंततः अखबार के प्रधान सम्पादक महोदय को प्रेस कौसिल आफ इन्डिया के सामने माफी मांगनी पड़ी थी तो न जाने क्यों वही प्रेस कौसिल आफ इन्डिया सब कुछ साक्षात देखते-जानते हुए भी इस मामले में खामोश चुप्पी साधे बैठा है? ऐसे ही एक बड़े दैनिक अखबार समूह में वर्षो से काम कर रहे सीनियर पत्रकार (जो स्वयं एक लघु पत्रिका का प्रकाशन संपादक भी है) ने मुरझाए हुए लहजे में कहा-अगर सम्पादक का घोर अमूल्यन नही हो गया होता तो अखबार का पहला पन्ना ही किसी ऊंचे उद्योगपति को बेच देतें या गिरवी रख देने की बात सोची भी नही जा सकती थी! क्योंकि आज देश का दैनिक प्रकाशन मिशनरी पत्रकारिता के ट्रैक से अमान पारर्वतन होकर औद्योगिकरण के ट्रैक में दौड़ने लगा है

> **पूरा प्रथम पृष्ठ व पिछला आवरण पृष्ठ के साथ-साथ भीतरी पृष्ठ भी विज्ञापन दाता के हवाले करके राष्ट्रीय खबरों को लोकल न्यूज की तरह समेट देना उन्हें ठीक लगता है या नहीं?**

तो विज्ञापन युक्त उसका होना संभावित ही है. लेकिन इस हद तक कि समाचार लेख आदि भी उसके बीच फंस कर गुम हो जाने लगे तो उसे कैसे लोक प्रिय दैनिक प्रकाशन कहा जा सकता है? यह तो 'मुल्ला नशरूददीन शाह का पैगामी फतवा ही हो गया, जो समाचार पत्र कम विज्ञापन पत्र ज्यादा है. याद होना चाहिए कि आज से कुछ दशक पूर्व भारत में एक ऐसा दौर भी था जब राष्ट्रीय दैनिक पत्रिका के पहले पृष्ठ पर विज्ञापन तो दूर राष्ट्रीय संदेश तक नही छापा जा सकता था, राष्ट्रीय नेता का धूंधला सा फोटो भी बामुस्किल छपता था वहां आज फिल्मी नृत्य -नृत्यागंना का भड़काऊ फोटों पूरे पृष्ठ आकार में आर्कषक रंगो में अखबार के शीर्षक के साथ छापा जाता है. निश्चित ही वह किसी कम्पनी का व्यवसायिक विज्ञापन होता है. जिससे बड़ा या छोटा उस एक के अलावा पहले पृष्ठ पर कोई दूसरा विज्ञापन नही दिखता था. 'मुल्ला चला कुर्बानी कों' लोकोत्ति चरित्रार्थ करता था. यदि हम विज्ञापनों की चर्चा करें तो टी.वी. धारावाहिको के बीच विज्ञापनों की इतनी ज्यादा भरमार हो गयी है कि दर्शक विज्ञापन देखना पसंद ही नही करता. इसी कारण टी०वी० दर्शकों का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है. किसी चीज की एक सीमा (हद) होती है, यदि वह हद से ज्यादा बढ़ जाये तो विनास का लक्षण है, के बावजूद दैनिक अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में भी विज्ञापनों की भरमार होने लगी है, से पाठकों की संख्या ज्ञान बर्धक प्रेरणात्मक सामाग्रियां पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ना चाहता है. ना कि विज्ञापन? यह माना कि किसी भी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन विज्ञापन के सहयोंग/दान के बिना संभव ही नहीं है, कि धारणा को कुछ प्रतिष्ठ पत्रिकाएं खारिज करती हैं, की परिधि में विज्ञापनों को निर्धारित और नियंत्रित तो किया जा सकता है. वैसे भी कोई पाठक विज्ञापन पढ़ता नही सरसरी दृष्टि से देखकर अलग कर देता है, तो फिर बड़ी-भारी रकम खर्च करके विज्ञापन का प्रकाशन करवाना कहां का औचित्य

है? पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन सीमित मात्रा में ही अच्छा लगता है. इस पर संबधित विभाग और निकायों को विचार करना चाहिए. हां! भड़काऊ आर्कषक विज्ञापनों की अपेक्षा सरकारी टेंडर नोटिस आदि विज्ञापन जरूर जनता के लिए उपयोग हो सकते है, भी छापा जाना चाहिए.

आज से पांच दशक पूर्व की पत्रकारिता और बीस दशक पूर्व की पत्रकारिता में जमीन आसमान का फर्क है, उससे अधिक आज के प्रकाशनों में है तब विज्ञापन एर्जेसियां नही होती थी विज्ञापन दाता सीधे अखबार के कार्यालय आकर विज्ञापन अपनी रूची के अनुसार बुक करवा कर प्रकाशित करवाता है, यदि उससे पूछा जाए कि उससे उसे कितना लाभ हुआ, तो कन्नी काट जाता है, का सीधा अर्थ है कि दो-चार ग्राहक से ज्यादा ग्राहक विज्ञापन पढ़ कर खरीदारी करने नही आते हैं.

अंग्रेजी शासन काल में कलकत्ता-मुम्बई व दिल्ली में धन कूबेरों ने अपने व्यवसाय में होने वाले सामाग्रियों-उत्पादकों का विज्ञापन भव्य रूप में अखबारों में छपवाया निर्धारित दर से कई गुणा ज्यादा रकम भी देने की पेशकश भी की, कि उक्त विज्ञापन प्रथम पृष्ठ पर छाप दिया जाए, लेकिन उन सब धनकूबेरों का विज्ञापन प्रथम पृष्ठ पर छापना अखबार के प्रकाशकों ने गवारा नही किया. क्योंकि तब अखबार पत्र-पत्रिकाएं बिकाऊ नहीं अपितु मिशनरीज होते थे. मगर आज के दौर में ऐसे विषयों को दैनिक अखबारों के कारोबारी मुखर्ता के सिवाय और कुछ नही मानेगें, क्योंकि ऐसे विज्ञापनों से प्रकाशन उद्योग को बड़ी आय होती है, उनका मुख्य उद्देश्य धनोपार्जन ही होता है.

पाठकों को विज्ञापन दाताओं की तुलना में ज्यादा महत्व देने की अनेक कई बेमिसाल मिसालें दैनिक अखबारों और अन्य लघु पत्र-पत्रिकाओं जिनमें-वायस आफ इन्दौर, प्रघात, ग्रामीण जनता, आदि पत्रिकाओं ने प्रस्तुत किया हैं जो बिना भड़किले विज्ञापनों के सहयोग के वर्षों से निरंतर छप रहे है. इनकी पहुंच भी जनता के लाखों प्रतियों की संख्या में हैं यह पत्रिकाएं अपने लेखकों को भरपूर परिश्रमिक भी देते है. इनका नियमित प्रकाशन विज्ञापनों के सहयोग के बिना कैसे संभव हो पा रहा है. प्रत्यक्ष स्पष्ट है कि पाठकगण इन्हें पसन्द करते हैं, की श्रेणी में विश्व स्नेह समाज' पत्रिका को रखा जा सकता है.

पहले धनकूबेरों कें विज्ञापन प्रथम पृष्ठ पर छापना अखबार के प्रकाशकों को गवारा नही था, क्योंकि तब अखबार, पत्र-पत्रिकाएं बिकाऊ नहीं अपितु मिशनरीज थे. मगर आज के दौर में ऐसी पत्र-पत्रिकाओं को कारोबारी मुखर्ता के सिवाय और कुछ नही मानेगें.

आज विश्व के कोने-कोने से अनेक तमाम विभिन्न भाषा लीपियों में दैनिक अखबार और पत्र-पत्रिकाओं के संस्करण प्रकाशित हो रहे है. जिनमें कुछ भारतीय भी है, के प्रकाशकों-संपादको ने शुरू में अपने प्रकाशनों में विज्ञापन कतई न छपने का निर्णय किया था, आज भी अपने निर्णय पर कायम हैं मगर पत्रिका की अपार लोकप्रियता के मददेनजर विश्व भर की न्यूज एजेन्सियों एवं विज्ञापन एर्जेन्सियों ने ऐसी पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन छापने के लिए मूंह मांगी दाम देने की पेशकश करते हुए इतना दबाव डाला कि प्रकाशनों के मालिकों को प्रकाशन बंद करना पड़ा. व्यवसायिक हानि को कौन बर्दास्त कर सकता है? प्रकाशन पूनः शुरू होने पर एक पत्रिका रिडर्स डाईजेस्ट जो दैनिक व साप्ताहिक भी प्रकाशित होता है, ने अपने पाठको से पूछा- ''क्या वे अपने पत्रिका में कुछ विज्ञापन छापने की अनुमति देना पसन्द करेंगे? पच्छत्तर प्रतिशत पाठकों ने साफ इंकार कर दिया, 15प्रतिशत पाठकों ने कहा विज्ञापन के लिए अलग पृष्ठ या पेज होना चाहिए और 10 प्रतिशत पाठको ने कहा विज्ञापन संस्करण अलग से छपना चाहिए. तब क्या था, सभी दैनिक अखबारों ने अलग से विज्ञापन संस्करण'' निकालना शुरू कर दिया और अन्य पत्र- पत्रिकाओं ने अलग से अतिरिक्त विज्ञापन पृष्ठ साथ में जोड़ना प्रारंभ कर दिया. जिनमें भारी विज्ञापनों की बुकिंग हुई. रिर्डस डाइजेस्ट का विज्ञापन संस्करण की 25 लाख प्रतियां प्रति अंक छपती है. यह स्थिति विदेशी दैनिक अखबारों और पत्र-पत्रिकाओ की है. ऐसा ही एक दैनिक अखबार हमारे भारत के बैंगलूर शहर से कन्नड भाषा में छपता है, जिसकी प्रसार संख्या तीन लाख प्रतिदिन की है-भी अलग से चार विज्ञापन पृष्ठ संलग्न करता है. इसमें विज्ञापनों का कोटा निर्धारित है, करोड़ों रूपयों के विज्ञापन प्रतिदिन बुक होते है. इस 16 पृष्ठ के अखबार का फुटकर मूल्य एक रूपया प्रति कापी है. सो चार पृष्ठ का विज्ञापन पृष्ठ अलग से है.

क्या पूरे भारत से प्रकाशित होने वाले

दैनिक अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में यह व्यवस्था नही हो सकती? जब कि हिन्दी भाषा दैनिक अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं की पाठक संख्या देश भर में सर्वाधिक है. यदि हम इन हिन्दी भाषा के दैनिक अखबारों पर चर्चा और विशलेषण-विचार करें तो पठन पाठन में इनका स्तर गिरता जा रहा है, कारण राष्ट्रीय और महत्व समाचार विचारों का स्तर घटता दिख रहा है, जितना अपराधिक घटनाओं को सुर्खियों में छापा जाता है, उतना महत्वपूर्ण घटनाओं और जनहित समाचारों को स्थान नही दिया जाता, ऊपर से व्यापक विज्ञापनों के भीड़ के बीच महत्वपूर्ण समाचार धूमिल व लुप्त प्राय होकर रह जाता है. ऐसी स्थिति में भारतीय पत्रकारिता का भविष्य कैसा होगा, सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है? विशेषकर हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य आधुनिक विज्ञापनों के चकाचौंध में अंधकारमय ही दिखता हैं. इस पर विचार-मंथन करने की जरूरत है. पाठको को सर्वोपरि मानने वाली ऐसी हिन्दी पत्रकारिता आज क्यों किसी को प्रेरित और प्रोत्साहित नही कर पाती, यह एक गूढ़ विषय है. अखबार के समूचे प्रथम पृष्ठ को विज्ञापनदाताओ के पास गिरवी रख देना, या बेच दिया जाना पाठकों के साथ प्रिंट मीडिया के महत्वों का धोखा है. यह कहा जा सकता है- ''कि वे अपने रचनाकारों-लेखकों को अंधेरे में रख रहे है.''

यह विषय सिर्फ यहीं तक नही है आज गुप्तागों को बड़ा और टाइट करने वाले भौडे+अश्लील विज्ञापन, जादू-टोना से हर समस्या दूर करने के दावे वाले विज्ञापन, जो अक्सर दैनिक सामाचार पत्रों में पढ़ने में आते है, देश के पाठकों को क्या संदेश देना चाहते हैं, समझ नही आता?

ऐसे बड़े और ख्याति प्राप्त दैनिक समाचार पत्रों में दिखाई देने वाले बाद भी पत्रकारिता पर नैतिकता लिखने वालें संपादकों की नियत पर प्रश्न खड़े करती है, अखबार के किसी कोने पर यह छापा जाता है कि छपने वाले किसी समाचारो विचारो और विज्ञापनों पर अखबार का सम्पादक प्रकाशक उक्त विषयक में कोई उत्तरदायित्व नहीं स्वीकार करेगा और ना ही इनसे कोई सहमति व्यक्त करेगा. इन विषयो में लेखक व विज्ञापन दाता स्वयं उत्तरदायी है. तात्पर्य यह कि मोल देकर कोई किसी भी प्रकार की लफ्फाजी अखबार में छपवा सकता है? दैनिक समाचार पत्रों की यह कैसी व्यवस्था है, जो धर्नोपाजन के लिए वह कुछ भी कर गुजर सकती है, पर भी प्रेस कौसिल आफ इन्डिया को निर्णय करना चाहिए. यह माना की देश आजाद है, हर किसी को कुछ भी बोलने लिखने छापने की आजादी है, का यह मतलब नही लगाया जा सकता कि अखबार और टी.वी. चैनलों को पाठकों-दशर्कों की अनुमति के बिना कुछ भी छापने व दिखाने की आजादी है? यह भारत है, यहां सब कुछ मुमकिन है कि नियति-नीति प्रवृति को बदलना होगा? आजादी का यह अर्थ नहीं है कि जो मर्जी हो कहें लिखे-छापें या करें? ''उसे पढ़-सुनकर कोई ठगा जायें या तबाह हो जाए या उसका प्रभाव भावी पीढ़ी पर पड़े और अखबार पत्र-पत्रिकाएं और टी०वी० चैनलों को दोष न मढ़ा जाए की व्यवस्था क्या जनहित में उचित है? क्या ऐसी पत्रकारित को जनहित का पैरोकार कहा जा सकता है? पर पी.सी.आई. को विचार करना होगा? आज से सात-आठ दशक पहलें देश में टी०वी० मोबाइल प्रसारण नहीं थे केवल अखबार और पत्र-पत्रिकाएं ही प्रचार-प्रसार के माध्यम -साधन थे. तब यह परंपरा निभाई जाती थी किसी भी पत्रिका में अन्दर के पृष्ठों में बीस प्रतिशत से अधिक जगह विज्ञापनों के लिए नही होती थी. अगर विज्ञापन ज्यादा आते थे तो अलग से परिशिष्ट पृष्ठो में छापने पड़ते तो पाठकों के लिए अतिरिक्त पृष्ठ जोड़ दिये जाते थे. तब रंगीन छपाई का जमाना नही था, इसलिये छपाई में ज्यादा खर्च भी नही होता था. पर आज के दौर में विज्ञापन बटोरना ऊंची और प्रतिष्ठ पत्रकारिता की पहचान बन गई है. और बदबूदार संडास भी जिन्हें पढ़ने के बजाए पाठक वर्ग केवल देख भर लेता है, और इकट्ठा कर कबाड़ी की दुकान पर बेच देना उचित समझता है. भारत में स्वच्छ और मिशनरी पत्रकारिता के लिए इस व्यवस्था को बदलना होगा अन्यथा भविष्य अखबार और पत्र-पत्रिकाएं केवल कबाड़ी की दुकान की शोभा ही बढ़ायेगी. ''

सात-आठ दशक पहलें देश में टी०वी० मोबाइल प्रसारण नहीं थे, तब यह परंपरा निभाई जाती थी किसी भी पत्रिका में अन्दर के पृष्ठों में बीस प्रतिशत से अधिक जगह विज्ञापनों के लिए नही होती थी. अगर विज्ञापन ज्यादा आते थे तो अलग से परिशिष्ट छापने पड़ते थे.

सी.बी.आई.की साख पर सवाल

-डॉ.आई.ए.मंसूरी शास्त्री
(लेखक लखीमपुर-खीरी से प्रकाशित 'भाग्य दर्पण' मासिक के संपादक हैं)

केन्द्रीय जाँच ब्यूरो का गठन पूर्व प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री द्वारा किसी भी मामले की निष्पक्ष जांच के उद्देश्य से किया गया था. तब शास्त्री जी भी नहीं सोचे होंगे कि इस पर इतने गंभीर आरोप भी लग सकते हैं और इस संस्था से जुड़े अधिकारी भ्रष्टाचार में लिप्त होंगे. यद्यपि समय-समय पर सी.बी.आई. विवादों के घेरे में आती रही है. यह बात भी सही है कि सी.बी.आई. केवल कहने के लिए स्वतंत्र है. वस्तुतः यह स्वतंत्र नहीं है, इस पर केन्द्र में सत्तारूढ दल के शीर्ष नेतृत्व का दबाव रहता है. राजनैतिक स्वार्थ साधने के लिए सत्तरूढ़ दल इसका दुरूपयोग करता रहा है. यह भी कहा जा सकता है कि जब-जब सी.बी.आई. पर राजनैतिक दबाव पड़ा तब-तब उसकी कार्य प्रणाली पर प्रश्न चिन्ह लगे. 1984 में सी.बी.आई. ने जब सिक्ख दंगे के आरोपी कांग्रेस नेता जगदीश टाइटलर को बेदाग करार दिया तब उस समय बहुत से लोगों ने उस पर अंगुली उठाई.

कालान्तर में मुलायम सिंह यादव और बसपा सुप्रीमो मायावती के विरूद्ध आय से अधिक संपत्ति के मामले में भी सी.बी.आई. ने लीपा पोती की. फलस्वरूप दोनों ही नेता कानून की पकड़ से बच गए. यह माना जाता है कि आय से अधिक सम्पत्ति के मामले के चलते ही मुलायम सिंह यादव और मायावती ने यू.पी.ए. सरकार के समय मनमोहन सरकार को बिना शर्त समर्थन दिया था. बोफोर्स तोप खरीद में भी सी.बी.आई. की निष्पक्षता पर सवाल उठे. एक बार तो सत्तारूढ़ दल के एक वरिष्ठ नेता ने तो खुलेआम विरोधियों को धमाकाते हुए कहा था

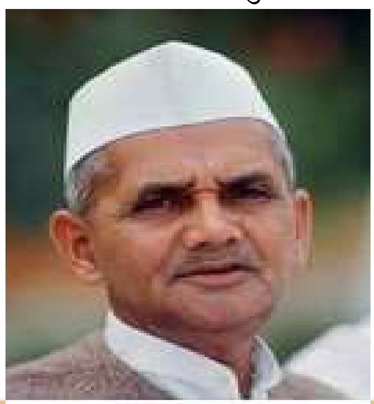

कि हमारे पास सी.बी.आई. है. वर्तमान में सी.बी.आई. में जो उठापटक जारी है उसके पीछे भी राजनैतिक हस्तक्षेप है. सत्तारूढ़ पार्टी राकेश अस्थाना को सी.बी.आई. में वरिष्ठतम पद पर बैठाना चाहती थी, क्योंकि आस्थाना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बेहद करीबी और चहेते माने जाते है. परन्तु वह ऐसा नहीं कर पाई लेकिन उसने निदेशक की आपत्ति के बावजूद उन्हें विशेष निदेशक बना दिया, जबकि निदेशक का कहना है कि आस्थाना कि पृष्ठभूमि स्वच्छ नहीं है, इसलिए वह निदेशक के लिए उपयुक्त नही हैं.

सी.बी.आई. को सत्तारूढ़ दल के इशारे पर काम करने की पुष्टि इस बात से भी होती है कि यू.पी.ए. सरकार के समय भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने इसे सरकरी तोता कहा था. आस्थाना पर मीट कारोबारी मोइन कुरैशी से तीन करोड़ रूपये रिश्वत लेने का भी आरोप है. सी.बी.आई. ने दिल्ली उच्च न्यायालय में राकेश आस्थाना पर आरोप लगाया है कि वह जांच की आड़ में वसूली का रैकेट चला रहे थे. एक जनहित याचिका के अनुसार राकेश आस्थाना पर कई मुकदमे भी चल रहे है. भारत सरकार ने जिस तरह आधी रात को राकेश आस्थाना और सी.बी.आई. निदेशक आलोक वर्मा को छूट्टी पर भेजते हुए संयुक्त निदेशक नागेश्वर राव को अंतरिम निदेशक बना दिया. अंतरिम निदेशक बनते ही जिस तरह से राव ने राकेश आस्थाना के विरूद्ध चल रही जांच में शामिल और जो निदेशक आलोक वर्मा के समीप थे उन्हें दूरस्थ स्थानों पर स्थानान्तरित कर दिया. इससे अंतरिम निदेशक पर सवाल खड़ा होता है.

विशेष निदेशक आस्थाना द्वारा सी.वी.सी. को एक शिकायती पत्र भेजा गया था जिसकी प्रति सी.वी.सी. से निदेशक आलोक वर्मा ने मांगी थी जिसे उन्हें

शेष पृष्ठ...22 पर

विकारों से मुक्ति द्वारा ही संभव है जीवन में ऊंचाई पर पहुंचना

-सीताराम गुप्ता, दिल्ली

एक वैज्ञानिक अध्ययन से पता चलता है कि पेंगुइन नामक पक्षी जो उड़ नहीं सकते लाखों साल पहले काफी ऊंचाई तक उड़ पाते थे. और भी कई पक्षी हैं जिनके पंख तो हैं लेकिन फिर भी उड़ नहीं पाते. प्रश्न उठता है कि क्या मात्र पंखों से ही उड़ा जा सकता है? पंख उड़ने में सहायक अवश्य होते हैं लेकिन ये भी सच है कि पक्षियों की हड्डियां अंदर से खोखली और बहुत हल्की होती हैं. इसी कारण वे आसानी से उड़ पाते है. पहले पेंगुइन की हड्डियां भी बहुत हल्की होती थीं जिससे वे आसानी से उड़ पाते थे. बाद में उनकी हड्डियां भारी और ठोस होती चली गई और एक समय आया जब उनकी हड्डियां इतनी भारी और ठोस हो गई कि उनके लिए उड़ना संभव नहीं रह गया. मनुष्य के उड़ने के संबंध में भी ये बात उतनी ही सही है.

मनुष्य के उड़ने के संबंध में भी ये बात सही है. मनुष्य का उड़ना उसकी प्रसन्नता, उन्मुक्तता व विकास का प्रतीक है. हमें ऊंचा उड़ने के लिए प्रसन्न रहना होगा. मनुष्य के लिए अपने मनोभावों को बदलकर उन्हें सुंदर व सकारात्मक बनाना बेशक सरल न हो लेकिन असंभव नहीं.

इसका ये तात्पर्य नहीं है कि मनुष्य पहले उड़ पाता था लेकिन अब हड्डियां भारी और ठोस हो जाने के कारण उड़ नहीं पाता. मनुष्य का उड़ना एक ओर उसकी प्रसन्नता व उन्मुक्तता का प्रतीक है तो दूसरी ओर उसके विकास का. जब कोई व्यक्ति सफलता अथवा अन्य किसी कारण से अत्यधिक प्रसन्न होता है तो प्रायः उसे कह दिया जाता है कि क्यों इतना उड़ रहे हो. तेज दौड़ने को भी उड़ना कह दिया जाता है. अब यह दौड़ भी जीवन के किसी भी क्षेत्र में हो सकती है. जब हमारी दौड़ अथवा उड़ान पर अचानक विराम लग जाता है तो इसका कारण मात्र हमारे पंखों की शिथिलता अथवा प्रयासों में कमी नहीं होता अपितु हमारी आंतरिक बनावट इसके लिए अधिक उत्तरदायी होती है.

जैसे पक्षियों की हड्डियों के आकार और घनत्व से उनके उड़ने की क्षमता निर्धारित होती है उसी प्रकार से मनुष्य के मनोभावों की अवस्था ही उसके उड़ने, आगे बढ़ने अथवा उपयोगी कार्य करने की क्षमता को निर्धारित करती है. मनुष्य अंदर से जितना अधिक हल्का रहता है वह उतना ही अधिक ऊंचा उड़ सकता है अथवा प्रसन्न रह सकता है. यदि उसके अंदर नकारात्मक घातक विचारों का कूड़ा-करकट भरा है तो उसे किसी भी स्थिति में प्रसन्नता नहीं मिल सकती.

अप्रसन्नता अथवा खिन्नता की अवस्था में मनुष्य न तो ठीक से कोई कार्य ही कर पाता है और न सफलता ही प्राप्त कर सकता है.

सफलता तभी मिल सकती है जब हम ठीक से कार्य करें. केवल प्रसन्नता व उन्मुक्तता की अवस्था में ही मनुष्य श्रेष्ठ कार्य कर सकता है. यदि हमारे मन में दूसरों के प्रति राग-द्वेष, ईर्ष्या, अमर्ष, प्रतिशोध की भावना आदि भाव व्याप्त रहते हैं तो हमारा आचरण भी उन्हीं के अनुरूप हो जाता है. ऐसे में संबंध बिगड़ने की संभावना बहुत अधिक बढ़ जाती है. संबंध बिगड़ते नहीं तो तनावपूर्ण अवश्य हो जाते हैं. तनावग्रस्त व्यक्ति कभी प्रसन्नता अथवा उन्मुक्तता अनुभव नहीं कर सकता. हमें ऊंचा उड़ने के लिए प्रसन्न रहना होगा और प्रसन्न रहने के लिए अपने मन को विकारों से मुक्त रखना होगा. एक पक्षी स्वेच्छा से न तो अपनी हड्डियों के घनत्व को कम कर सकता है और न उन्हें अंदर से खोखला बना सकता है लेकिन मनुष्य के लिए अपने मनोभावों को बदलकर उन्हें सुंदर व सकारात्मक बनाना बेशक सरल न हो लेकिन असंभव नहीं. यदि मन में व्याप्त विकारों के परिमार्जन का ये सिलसिला एक बार प्रारंभ हो जाता है तो पक्षियों की तरह ऊंचे उड़कर इस सुंदर संसार के सौंदर्य का अनुभव निश्चित रूप से किया जा सकता है.

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि

-डॉ.आई.ए.मंसूरी शास्त्री
(लेखक खीरी से प्रकाशित भाग्य दर्पण के संपादक हैं)

महर्षि वाल्मीकि को आदि कवि माना गया है. महर्षि वाल्मीकि ब्रह्मा जी के पौत्र और प्रचेता के पुत्र थे. इन्हें बचपन में ही एक भीलनी ने चुरा लिया था और इनका पालन पोषण किया था. ये दर्शन, राजनीति, नैतिकता, शासन कुशलता, खगोल एवं ज्योतिष शास्त्र तथा मनोविज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान् थे. यह उनके रामायण रचना में स्पष्ट झलकती है. ये महाराजा दशरथ के समकालीन थे. जिन्होंने राम के समस्त जीवन काल को देखा था. लवकुश काण्ड को प्रत्यक्ष देखाकर लिखा था.

श्रीराम द्वारा माता सीता के त्याग के समय माता सीता इन्हीं की आश्रम में रहती थीं, जहां लव का जन्म हुआ और फिर कुश को महर्षि वाल्मीकि ने अपने तप के बल पर सृजित किया. ये राम नाम के जापक थे.

इनके जन्म होने का कही भी कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता है. सतयुग, त्रेता और द्वापर तीनों कालों में वाल्मीकि का उल्लेख मिलता है वो भी वाल्मीकि नाम से ही. राम जब उनसे मिलने उनके आश्रम में आये थे तो वाल्मीकि जी के चरणों में दण्डवत प्रणाम करते हुए कहा था

"तुम त्रिकालदर्शी मुनिनाथा,
विश्व बिद्र जिमि तुमरे हाथा।।"

अर्थात् आप तीनों कालों के जानने वाले स्वयं प्रभु हो. ये संसार आपके हाथ में एक बेर के समान प्रतीत होता है.

इनकी जाति और तपस्थली के बारे में विद्वानों में मतभिन्नता है. इन्हें कुछ लोग निम्न जाति का बतलाते हैं. पर वाल्मीकि रामायण के 7 |96 |99 7 |93 |17 तथा अध्यात्म रामायण के 7 |7 |31 में इन्होंने स्वयं अपने को प्रचेता का पुत्र कहा है. मनुस्मृति के 1 |35 में

'मरीचिम् यंगिरसो पुलस्त्यं पुलहं क्रतुम।
प्रचेतसं वशिष्ठं च भृगुं नारदमेव च।।'

अर्थात् प्रचेता को वशिष्ठ, नारद, पुलस्त्य, मरीचि, अंगिरा, आदि का भाई लिखा है. स्कन्द पुराण के वैशाख महात्म्य में इन्हें जन्मान्तर का व्याधा बतलाया गया है. इससे सिद्ध होता है कि जन्मान्तर में ये व्याध थे. व्याथ-जन्म के पहले भी स्तम्भ नाम के श्रीवत्स गोत्रीय ब्राह्मण थे. व्याध-जन्म में शंख ऋषि के सत्संग से, राम नाम के जप से ये दूसरे जन्म में 'अग्निशर्मा' (मतान्तर से रत्नाकर) हुए. वहां भी व्याधों के संग से कुछ दिन प्राक्तन संस्कार वश व्याध-कर्म में लगे. फिर सप्तर्षियों के सत्संग से मरा-मरा जपकर-बांबी पड़ने से वाल्मीकि नाम से विख्यात हुए और वाल्मीकि रामायण की रचना की. गोस्वामी जी ने लिखा है

'उल्टा नाम जपत जाने संसारा।
वाल्मीकि भय ब्रह्म समाना।।'

बंगला के कृतिवास रामायण, मानस, अध्यात्म रामायण 2 |6 |64 से 92, आनन्दरामायण राज्य काण्ड 14 | 21—49, भविष्य पुराण प्रतिसर्ग 4 |10 में भी यह कथा थोड़े हेर-फेर से स्पष्ट

है. गोस्वामी तुलसी दास ने वस्तुतः यह कथा निराधार नहीं लिखी. अतएव इन्हें नीच जाति का मानना सर्वथा भ्रम मूलक है. बाल्मीकि जी जब कुश, समीधा आदि लेने निकले थे तो क्रौंच (सारस) पक्षी के जोड़े को निहारने लगे जो प्रेमालाप में लीन था, तभी उन्होंने देखा कि एक बहेलिया (निषाद) अथवा व्याध पक्षी के जोड़े में से नर पक्षी का वध कर दिया और मादा पक्षी विलाप करने लगी. उसके इस विलाप को सुनकर महर्षि वाल्मीकि की करूणा जाग उठी और द्रवित अवस्था में शोकाकुल होकर इनके मुख से यह श्लोक प्रस्फूटित हुआ-

''मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम्।। (वाल्मीकि 1 |2 | 40)

अर्थात् अरे बहेलिया (निषाद) तूने काम मोहित मैथुनरत क्रौंच पक्षी को मारा है, जा तुझे कभी भी प्रतिष्ठा की प्राप्ति नहीं होगी. इसी श्लोक को किसी विद्वान ने इस प्रकार लिखा है-

''क्रौन्चद्वन्द्व वियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वमागतः।

इसके बाद इन्होंने नारद मुनि द्वारा सुनाये गये रामचरित को ब्रह्मा द्वारा प्रेरणा प्राप्त वाल्मीकि रामायण की रचना की. वाल्मीकि रामायण संस्कृत का एक अनुपम महाकाव्य है, जिसमें 24,000 श्लोक हैं. इसके माध्यम से रघुवंश के राजा राम की गाथा कही गई है. इसे आदि काव्य तथा इसके रचयिता महर्षि वाल्मीकि को आदि कवि कहा गया है. रामायण के सात अध्याय हैं जिन्हें काण्ड कहा जाता है. यह संस्कृत साहित्य का एक आरंभिक महाकाव्य है जो संस्कृत भाषा में अनुष्टुप छन्दों में रचित है. वर्तमान में राम के चरित्र पर रचित जितने भी उपलब्ध ग्रंथ हैं उन सभी का मूल महर्षि वाल्मीकि कृत ''वाल्मीकि रामायण' ही है.

प्राचीन ग्रंथों में वाल्मीकि रामायण का उल्लेख मिलता है जिसमें से कुछ का नाम इस प्रकार है-अग्निपुराण, गरूणपुराण, हरिबंशपुराण(विष्णु पर्व), स्कन्दपुराण (वैष्णव खण्ड), मत्स्यपुराण, महाकवि कालीदास द्वारा रचित 'रघुवंश' भवभूति द्वारा रचित 'उत्तर रामचरित, वुहद्धर्मपुराण जैसे अनेक प्राचीन ग्रंथों में महर्षि वाल्मीकि एवं उनके महाकाव्य रामायण का उल्लेख मिलता है.

वाल्मीकि आश्रम

वाल्मीकि रामायण 1 |22 की कौशाम्बी प्रयाग से 14 मील (लगभग 21 किमी) दक्षिण-पश्चिम दूरी पर कोसम गांव है. धर्मारण्य आज की गया है. 'महोदय' नगर कुशनाभ की कन्याओं के कुब्ज होने से आगे चलकर कान्यकुब्ज, पुनः कन्नौज हुआ, गिरिव्रज 'राजगिर' (बिहार) है. 1 |24 के मलद-करूष आरा जिले के उत्तरी भाग हैं. केकय देश कुछ लोग 'गजनी' को और कुछ झेलम एवं कीकना को कहते हैं. बालकाण्ड 2 |3–4 में आयी तमसा से सर्वथा नदी पार वाल्मीकि जी का आश्रम था. यह उस तमसा से सर्वथा भिन्न है, जिसका उल्लेख गंगा के उत्तर तथा अयोध्या के दक्षिण में मिलती है. वाल्मीकि-आश्रम का उल्लेख 2 | 56 |16 में भी आया है. पश्चिमोत्तर शाखीय रामायण के 2 |114 में भी इस आश्रम का उल्लेख है. बी.एच. वडेरने 'कल्याण' रामायणांक के 496 पृष्ठ पर इसे प्रयाग से 20 मील दक्षिण लिखा है.

सम्मेलन पत्रिका 43 |2 के 133 पृष्ठ पर वाल्मीकि आश्रम प्रयाग-झांसी रोड और राजापुर-मानिकपुर रोड के संगम पर स्थित बतलाया गया है. गोस्वामी तुलसी दास के मत से इनका आश्रम 'वारिपुर दिगपुर के बीच (विलासतिभूमि) था. मूल गोसाई चरितकार 'दिगवारिपुरा बीच सीतामढ़ी' को वाल्मीकि-आश्रम मानते हैं. कुछ लोग कानपुर के बिठूर को भी वाल्मीकि-आश्रम मानते हैं. 2 | 56 |16 की टीका में कतक, तीर्थ, गोविन्दराज, शिरोमणिकार आदि इनका समाधान करते हुए लिखते हैं कि ऋषि प्रायः घूमते रहते थे. श्रीराम के वनवास के समय वे चित्रकूट के समीप तथा राज्यारोहण काल में गंगा तट पर (बिठूर) में रहते थे. वाल्मीकि रामायण 7 |66 |1 तथा 7 |71 |14 से भी वाल्मीकि आश्रम बिठूर में ही सिद्ध होता है. स्कन्दपुराण आवन्त्य खण्ड 1 |24 में इनका आश्रम विदिशा (आज का मेलसा मध्य भारत) तथा भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व 4 |10 |54 में उत्पलारण्य-उत्पलावर्त (बिठूर, कानपुर) में माना गया है.

जिंदगी में ऐसे इंसान पर कभी जुल्म मत करना..... जिसके पास पुकारने के लिए परमात्मा के अलावा और कोई न हो

अब मुझे उड़ने दो

नई अभिलाषा के संग,
अब मुझे जीने दो।
अभिलाषा हैं उड़ने की,
अब मुझे उड़ने दो।
चाहती हूँ मछली सा तैरना
चाहती हूँ गुलाब सा खिलना
मैं हूँ एक कस्तूरी,
अब मुझे महकने दो
अभिलाषा है उड़ने की,
अब मुझे उड़ने दो।
खुशियां हूँ बाबुल अँगना की
दुलारी हूँ माँ के आँचल की
मैं हूँ कली गुलाब की,
अब मुझे खिलने दो
अभिलाषा है उड़ने की,
अब मुझे उड़ने दो।
बोली ना कभी माँ बनकर
बोली ना कभी पत्नी बनकर
मैं हूँ बेटी आपकी,
अब मुख खोलने दो
अभिलाषा है उड़ने की,
अब मुझे उड़ने दो।
आत्मशाली हूँ मैं,
प्रदत्त है कुछ ज्ञान मुझे
मापनी पृथ्वी की गहराई,
इतनी है पहचान मुझे
मैं जिज्ञासा की पुतली हूँ,
प्रश्नों को हल करने दो
अभिलाषा है उड़ने की,
अब मुझे उड़ने दो।

-डॉ०नीता अग्रवाल 'निधि'
हनुमानगढ़, राजस्थान

सम्मान की लड़ाई

अगर स्त्री दलित हो
कामवालियाँ हों तो
पूछो कोई उनसे
कितना सम्मान है वो पाती
और कितना अपमान
जब एक ही घर में बेटी और बहू में
हो भेद तब कहाँ होता है
उनका मान या अपमान
कौन है वो समाज के लोग
जो तय करते हैं अलग-अलग मापदंड
अलग-अलग कसौटियां
दरअसल मुद्दे भी चुनावी मुद्दे की
तरह चुने जाते हैं
इसलिए कोई मरकर भी मुद्दा है
और कहीं जिंदा भी पैर की जूति है
जिनकी आवाजें सुनी नहीं जातीं
जिसने जलायी होंगी दहेज की खातिर
बहू-बेटियां आज कुछ वही लोग
तो खडते नहीं मसालों के साथ
ढूँढकर बताना....?

-सुधा मिश्रा, पटना, बिहार

"मजाक"

अणु-परमाणु का जखीरा लेकर
बन रहे हैं मनुष्ता के रक्षक
इतना घिनौना मजाक
ठीक नहीं हैं
बड़े शर्म की बात हैं
जो डरे हुए हैं तुमसे।
कमजोर है तुमसे।
उन्हें दोस्त कहके अहं से भरे हो तुम
जबकि तुम माहिर खिलाड़ी हो
शतरंज के
और शेष तुम्हारे मोहरे
दूसरी तरफ कोई खेलने वाला
मिल गया बराबरी का
तब समझ आयेगा कि
हार भी सकते हो तुम

तब

मान लो किसी दिन
तुमने परमाणु का बटन दबा दिया
दुनियां तबाह हो गई
तुम क्या पाओगे
लाशों पर राज करोगे
या नाटक करोगे
धरती बचाने का
और तुम भी न रहे
तब-----

-देवेन्द्र कुमार मिश्रा,
छिन्दवाड़ा,म.प्र.

दीप शिखा पुजती है

मन ही मन मनोरम बात चलती है
झरने को देख चट्टान मचलती है।
गर भंवरों के गीत लगे गूंजने
फूल संग कली सयानी लगती है
हालातों से लड़ते उम्र गुजर रही
जिस कदर मुट्ठी से रेत फिसलती है
किसी का कद जरा क्या ऊँचा हुआ
बौनों के बीच में बहस चलती है
घर आये शत्रु की जब सुनों दास्तां
वज्र काया भी मोम सी पिघलती है
जुगनू खुद को चाहे दिनमान कहें
मंदिर में दीपशिखा ही पुजती है।

-जगन्नाथ विश्व,
नागदा जक्शन, म.प्र.

मुक्तक

जब तक मेरे शहर में शराब बंद थी, अमन ही अमन था।
नहीं कहीं कोई दंगा था, खुशहाल सारा का सारा यह चमन था।।
लगा था लौट के फिर एक बार वे दिन सारे आये है।
हर चेहरे ये मुस्कान और हर्मित अलवरी हर मन था।।१।
यह सुख-सुविधाए केवल उनके लिये है, जिनका जोर है।
बाकी को धक्का-मुक्की और मुश्किल रोटी का कौर है।।
देखने से पहले ही बीत गये वे दिन सारे अलवरी।
रोज रोमी-रोमी रात और एली-ढली अब भौर है।।२।।
अब कुछ यहाँ धन ये नित्य ध्यान लगाये बैठे है।
नहीं कमी मिटने वाली भूख जगाये बैठे है।
समझाये कौन इन नादां ना समझो को अलवरी
बनने हैवान चोले तक को दगाये बैठे है।।३।।
सदा साफ-साफ और सच को सच लिखता।
नहीं कभी चन्द सिक्को के लिये बिकता हूँ।।
इस ईमान की फसल को, हमेशा अलवरी।
कठोर परिश्रम की बून्दों से सिंचता हूँ।।४।।

-डॉ० जयसिंह अलवरी,
सम्पादक-साहित्य सरोवर, बल्लारी, कर्नाटक

गीत

जब से अक्षर हुए हमारे, जीवन में फैले उजियारे,
शिक्षा पहुंची आंगन व्दारे, सबके बिगड़े भाग संवार।
अक्षर है जीवन के साथी, अक्षर दीपक अक्षर बाती,
शिक्षा सुख के फूल खिलाती, सबकों अपना हक दिलवातीै।
अक्षर मन के भाव सुधारे, नफरत को ये सदा ललकारे,
निर्मल सी हो गई जिन्दगी, शब्दों में खो गई जिन्दगी।
दूर हुई दुनिया की गन्दगी, प्रेम से करो प्रभु की बन्दगी,
ईश्वर है सबसे न्यारे, जो दिखाते स्वर्ग के नजारे।
जीने के नित्य नये तरीके, अक्षर से ही हमने सीखे,
हंसी खुशी में हर पल बीते, रहे प्रेम का प्याला पीते।
मिल गये अब सच्चे सहारे, नहीं भटकेगें हम बंजारे,
जब भी हमने जोड़े अक्षर, भ्रम मिटा भीतर बाहर।
प्रगति का अब मिला अवसर, नहीं झुकेगा अपना भी सर,
मिट गये अज्ञान अंधियारे, दूर हरे बादल कजरारे।
अक्षर को परमेश्वर मानों, शिक्षा कि महिमा महचानों,
शब्दों को जानो पहचानों, मेरा कहा आज तुम मानो।
शीघ्र की कष्ट मिटेगें सारे, ईश्वर ने किये ईशारे,,

-रामचरन यादव, बैतूल म० प्र०

दोहे

बुझी हुयी वे राख फूंफकर, जला रहे हैं, अंगीठी,
आरक्षण की खीर आज तक, जिन्हें लग रही मीठी,,
पग-पग अतिक्रमण लीलीयें, हर पद है आरक्षित,
हर एक छोटी मछली मानों, बड़ी से है अब भक्षित,,
कलयुग में किरकेट का, इक-इक रन गिन जाय,
किसान कर रहे खुदकुशी, शासन शतक छुपाय,,
बता रहा हूँ आपको, घातक है दलतन्त्र,
प्रजानन्त्र का भ्रूणवध, करता आया हस्त्र,,
करता आया हस्त्र, इसी ने बापू को मार,
खण्ड़-खण्ड़ कर दिया है भारत, लूटा देश है सारा,,

-पं० **मुकेश चतुर्वेदी 'समीर'**,
सागर, मध्य प्रदेश

जड़

मस्तिष्क किसे निर्देश दे कि चलना है......चरणों को
चारणयुगल धरे कहाँ.........जमीन पर
वृक्ष के पत्तों को नहीं जड़ो में सिंचना चाहिए......
महापुरुष जी की वाणी।

चाहे जितनी भी ऊँचाई चढ़े हों...जड़े जमीन पर ही होते
उड़ान कितनी भी ऊँचाई की क्यों न भरे हो....
यात्रा की आदि और अंत दोंनो जमीन।

इन दिनों जड़ के तलाश में
जमीन पर उतरने वाले लोग
दोहराने लगे हैं मिट्टी और जड़ के संबंधों का
बीजगणित
जंगली पौधा कभी वृक्ष नही हो सकता
इसी सत्यता की तलाश में
जड़ के नाम पर मिट्टी खोद रहें हैं।

उखड़कर सुखने की कगार पर पहूंचे एक वृक्ष देखकर
जड़ और मिट्टी के दरमियान जीवन परिक्रमा समझने में
हम मजबूर हो गए।
मिट्टी और जड़ का संबंध जब तक बना रहेगा
जीवों का भी जीवन रहेगा।
दादाजी की जड़ --- परदादाजी
पिताजी की जड़ --- दादाजी
और मेरा जड़ --- पिताजी
पिताजी का जड़ पकड़ कर
मैं एक वृक्ष बना
पर हवा और छाया देने लायक न बन पाया।

मजबूत खम्बों की जड़ पकड़ कर
खड़ा रहता हैं घर
घर की जड़े होतीं हैं एक समाज का परिचायक।

ऐसा कौनसा धूप आया
जो घर को बांधकर रखने वाला जड़ को ही सूखा डाला
ऐसी कौनसी तूफान आई के
घर को घर लेजाने वाले वह
आत्मियता का जड़ ही टूट गया।

पिताजी और मेरा जड़ अब न रहा
आडम्बरपूर्णता से अग्रसर हो रहा हूँ
या अपने आपको पीछे की ओर खींचे ले जा रही हूँ
बिन पतवार के एक नैया हमें खिचे ले जा रहे हैं
किसी अनजान घाट की ओर।
अब पिताजी का पता जानने को मेरा
फुरसत ही कहाँ।

जैसी करनी वैसी भरनी
अब हमें इंतजार हैं उस दिन की
कब हमारे बच्चे तोड़ दे हमारे संबंधों का
जड़।

मूल : किशोर बोड़ो
अनुवाद : **नाजु हातीकाकोती**, असम

संदेश

नशा-नशीली वस्तु से, 'अखिल' रहें नित दूर।
सबके होंगे आप प्रिय, प्यार मिले भरपूर।।
जो नर करता है नशा, मरता बारम्बार।
हेय दृष्टि से देखते, देते सब दुत्कार।।
नशा नाश तन का करे, पीढ़ी को बरबाद।
'अखिल' नशे को छोड़िए, रहें सदा आबाद।।
नशे की लत में जो पड़ा, हुआ सभी कुछ नाश।
बीबी-बच्चे रो रहे, चलती केवल श्वास।।
करो आत्म-संकल्प अब, नशे को देंगे त्याग।
स्वप्न पूर्ण होंगे 'अखिल' उठो मनुज! अब जाग।।

-अखिलेश निगम 'अखिल',
कबीर मार्ग, लखनऊ, उ.प्र.

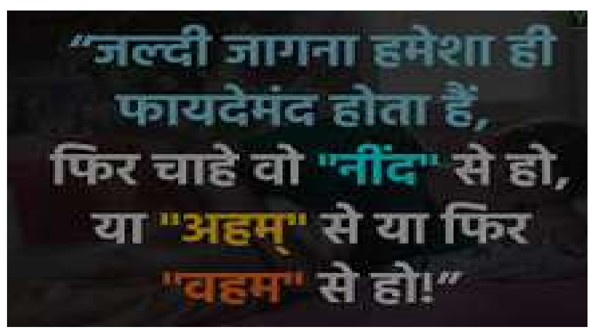

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

समाज

मायके के दखल से लड़कियों के नहीं बन पा रहे हैं अपने घर

तेजी से टूट रहे हैं पति-पत्नी के रिश्ते, मोबाइल फोन से घर-घर में कलह

-प्रमोद सोमानी, भोपाल

भोपाल की जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में काउंसलिंग के दौरान अभी तक हजारों प्रकरणों में यह तथ्य सामने आए हैं कि शादी के बाद भी मायके वाले अपनी लड़की के लगातार संपर्क में रहते हैं. दिन भर में कई बार बात करते हैं. हर छोटी बड़ी बातों में मां का हस्तक्षेप होने से शादी हो कर नए घर में आई लड़की अपने पति और ससुराल पक्ष के साथ आत्मीय रिश्ता ही नहीं बना पाती है. मायके वालों के दखल के कारण पहले दिन से ही वह ससुराल को अलग तरीके से देखती है. शादी के कई माहों बाद भी वह अपनी मां को मायके से दिन भर जुड़ी रहती है. उनके ही निर्देश पर वह काम करती है. जिसके कारण हजारों घर बसने के पहले ही बिखरने लगते हैं. पति-पत्नी के बीच तलाक की नौबत आ जाती है.

कुटुंब न्यायालय में काउंसलिंग के दौरान तलाक के लिए ५० फीसदी से अधिक मामलों में मायके वालों के लगातार नियमित हस्तक्षेप के कारण रिश्ते टूटने की बात कही गई है. हर छोटी-बड़ी बात में मायके के लोग हस्तक्षेप करते हैं.

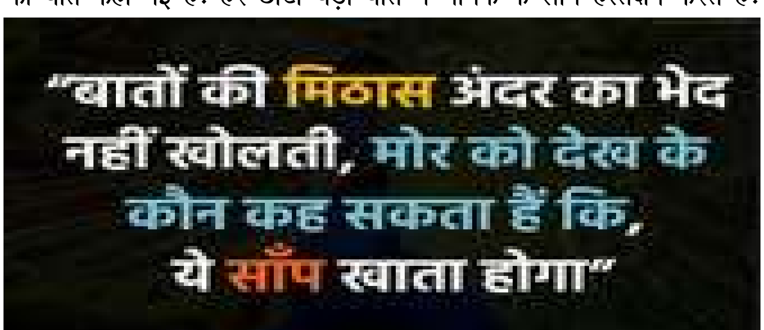

मोबाइल पर ज्यादे बात के कारण, मायके और ससुराल के बीच झूला, झूलती लड़की

मोबाइल फोन रिश्तों को बनने के पहले ही बिगाड़ रहा है. शादी होकर लड़की ससुराल पहुंचती है. सबसे ज्यादा बात वह अपने मायके वालों और मां से करती है. पति और ससुराल की हर बात को वह मायके वाले उसको ज्यादा से ज्यादा अधिकार संपन्न बनाने और हर किसी को अपनी उंगलियों पर नचाने के नुस्खे देते रहते हैं. जिसके कारण नव दंपति के बीच में भी वह रिश्ता नहीं बन पाता है, जो एक पति पत्नी के लिए जरूरी होता है. इसके साथ ही पत्नी के रूप में शादीशुदा लड़की अपना घर भी नहीं बना और बसा पाती है. जिसके लिए उसने शादी की है. इस तरह के मामलों में काउंसलर की भूमिका भी कोई असर नहीं कर पा रही है.

कहानी

सीमा की सीमा

-श्रीमती पूनम रानी शर्मा,
कैथल, हरियाणा

''खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले खुदा बन्दे से पूछे कि बता तेरी रजा क्या है' मशहूर शायर मुहम्मद इकबाल की ये पंक्तियां पर्वतारोही सीमा गोस्वामी पर पूरी तरह खरी उतरती है. माऊंट एवरेस्टी सीमा गोस्वामी जी का जन्म कैथल जिले के कस्बा सीवन में 10 मार्च 1989 में हुआ. सीमा गरीब परिवार से सम्बंध रखती है. सीमा ने स्कूल टाईम से ही खेलों में भाग लेना शुरू कर दिया था. सीमा ने कराटे ब्लैक बेल्ट, आर्म व्रेस्टिलिंग में 8 बार 60केजी गोल्ड मेडलिस्ट, 5 बार राष्ट्रीय चैम्पियन, 15 बार राज्य चैम्पियन, टुग ऑफ बार नेशनल दो बार गोल्ड, वुशु कराटे में 5 गोल्ड मेडल, बाल बैडमिंटन राष्ट्रीय दो बार प्राप्त किए. ये तो कुछ भी नहीं, छोटे-मोटे खेलों का तो जिक्र भी नहीं किया मैंने. वो कहते है ना प्रतिभा छुपती नही तो सीमा कैसे छुप सकती थी? स्कूल में भी इनका प्रदर्शन अच्छ रहा, कॉलेज में भी. लड़के इनसे कन्नी काटते थे. ऐसी धाकड़ रही कि लड़के आंख उठाकर भी नही देख पाते. 2009 में सीमा एनसीसी के कैंप में उत्तराखंड गई थी. ममता सौदाजी धाक्कड़ सीमा को एक अच्छी स्पोंट्स पर्सन मानते हुए अपने साथ मून पीक पर ले गई, जिसमें सीमा सफल हुई व उसकी पहाड़ों की दुनिया शुरु हो गई. वही पहाड़ अब उसे सुकून देने लगे. सीमा ने 2009 में आर्मी दल के साथ लमखागा पीक पर चढ़ाई करके सफलता हासिल की.

2013 में एडवांस कोर्स किया जिसमें डीकेडीजेड पीक को सम्मिट किया व सफल हुई. पर दुर्भाग्य से उसी दौरान उत्तराखंड में बाढ़ आ गयी थी जिसमें सीमा व उसकी टीम बाढ़ में फंस गये थे. उसने अपने सामने वहां बहुत लोगों की मौत देखी. घरों को बहते देखा. पलक झपकते ही सब तबाह हो गया था. ऐसा उसने अपने जीवन में पहली बार देखा था. वो और उसकी टीम हर जगह से बचते हुए बहुत बार मौत के मुंह से बाहर निकले. पैरों में छाले पड़ने से चलने में भी दिक्कत आई. कहीं कहीं तो पैरों की बजाय हाथों से बन्दर चाल चलना पड़ा. पैरो में पानी के कारण जोक लग गयी जिसके कारण खून निकला. पैर गल गये थे, छालों के कारण जल भी रहे थे लेकिन रुकना भी तो नहीं था. हर जगह पर खतरा होने के कारण कुछ खाने को भी नहीं था.

जैसे ही यह खबर टीवी के माध्यम से घर वालों को मालुम हुई तो सभी परेशान हो गए. माँ के दिल पर तो सदमां सा लग गया था. बेटी चाहे अमिर की हो या गरीब की, बहुत प्यारी होती है-माँ-बाप को. जब कोई भी पता नहीं आया तो उसकी माँ ने तो यहां तक कह दिया था कि या तो सीमा से बात करवा दो या फिर मुझे जहर देकर मार दो. सीमा ने एनआईएम उत्तराखंड उत्तरकाशी पहुंच कर अपना फोन लेकर घर कॉल की तब उनकी माँ को चैन आया. सीमा ठीक है, जिन्दा है ये जानकर परिवार खुशी से झूम उठा. वो कहते हैं न जब तक अपनी आँखों से न देख ले माँ का दिल नहीं मानता. सीमा वापिस जल्दी आओ कहकर माँ का फोन कट गया. सीमा घर के लिए रवाना हो गई. सीमा ने जो भयानक दृष्यों को पहली बार अपनी

आँखों से देखा तो एक बार तो मन में आया कि अगर उन मरने वालों की जगह हम भी होते तो क्या होता? जो सपना देखा है वो बाढ़ में बह जाता. इस तरह रास्तें में कभी उस दृष्य को याद करती हुई, बहुत सी बातें सोचती हुई सीमा अपने घर पहुंच गई.

पहले तो सबने खुशी मनाई, सबने बहुत प्रश्न किए. सब सीमा की वापसी पर बहुत खुश थे. सभी ने जोर देकर बोल दिया कि अब पहाड़ों पर नहीं जाना. शुक्र है बच तो गई. सबका प्यार उसे पहाड़ों से दूर ले जा रहा था. पहले ही गरीबी का माहौल, ऊपर से और खर्चा, चलो वो भी कोई बात नहीं, फिर हादसे. इस तरह बहुत दबाब बन गया था सीमा पर. घरवालों ने बोल दिया था कि अब पहाड़ों पर नहीं जाना तो नहीं जाना. मौत के मुंह से वापिस लौटी हुई सीमा ने उस समय परिस्थिति को देखते हुए आखिर ये बोल ही दिया-'ठीक है, अब पहाड़ों पर कभी नहीं जाऊँगी.'

एक बार पहले भी सीमा ने कहा कि पहाड़ों पर नहीं जाऊंगी. यह दूसरी बार था. दोनों बार यही बात कहने में अंतर यही था कि पहले तो वह शुरुआत थी, उसे कोई फर्क नहीं पड़ा ऐसे कहते हुए. दूसरी बार में तो मजबूरी में घर वालो की खुशियों के लिए कहा. पर अबकी बार मन में दुख भी था. माउंट एवरेस्ट सम्मिट करना.

कुछ समय बाद सीमा ने फिर आत्मविश्वास से अपने माता-पिता से बात की. उन्हें समझाया. उसने कहा 'हर बार पहाड़ो में ऐसे नहीं होता. अबकी बार में बच कर आयी हूं ना, भगवान ने मेरा साथ दिया. आप सबकी दुआ भी तो थी मेरे साथ और आगे भी रहेगी. मैं अपना माऊंट ऐवरेस्ट सम्मिट करके अपना सपना पूरा करना चाहती हूं.'

दूर बेटी के सपनों का मान माँ-बाप ने रखा. फिर 2014 में सीमा ने नेपाल में फार्म अप्लाई किया और जब उसका सिलेक्शन लेटर आया तो उसमें एवरेस्ट पर चढ़ाई करने का खर्च देखा कि 21 लाख से लेकर 30 लाख तक है. इतना खर्च देखकर सीमा व उसके घर वालों के होश उड़ गये. जिस घर की सेविंग 1000 भी ना हो, इतनी बड़ी रकम कैसे दे पाते. फिर बहुत से जान पहचान वालों ने कहा कि सामाजिक संस्थाओं से बात करते हैं, लेकिन कहीं भी बात नहीं बनी. किसी ने आश्वासन दिया कि मदद करेंगे लेकिन खाली चक्कर कटवाए, मदद नहीं की.

सीमा के पिताजी ने अपने मकान की कीमत लगवाई तो वह खास नहीं थी. इस तरह पैसे न होने के कारण सीमा के घरवालों ने कहा कि तुम ऐवरेस्ट जाने के बारे में भूल जाओ. इस तरह 2014 में वह सपना पूरा न कर पाई. अब एवरेस्ट पर जाना सीमा की जीद हो गई थी. उसने घरवालों को साफ कह दिया कि 2015 में जरूर जाऊँगी. फिर सीमा ने 2015 में फिर प्रयास किया. उसके साथ 10 से 15 लोग भी सरकार, संस्थाओं के पास गये.

क्रमशः.....

सी.बी.आई.की साख पर सवाल पृष्ठ 11 का शेष.....

नहीं दिया गया. बाद में सी.वी.सी. द्वारा सरकार को जो पत्र लिखा गया उसे पढ़ने से पक्षपात का आभास होता है. यह भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिस निदेशक को अंतरिम रूप से कार्यभार दिया गया उसकी सत्यनिष्ठा पर सवालिया निशान लगाये जा रहे हैं. इस सबके बीच सारा मामला सर्वोच्च न्यायालय चला गया. क्या भारत सरकार को सी.बी.आई निदेशक को छूट्टी पर भेजने का अधिकार हैं? चूंकि सुप्रीम कोर्ट ने सी.बी.आई. निदेशक का न्यूनतम कार्यकाल दो वर्ष निर्धारित किया है, इसलिए इससे पहले उन्हें कार्यभार से वंचित करने को लेकर सवाल उठ रहे है. क्या यह आवश्यक नहीं था कि चयन समिति के तीनों सदस्यों यानी प्रधानमंत्री, सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और नेता प्रतिपक्ष की राय इसमें लेने के बाद ही कोई कदम उठाया जाता.

सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया है कि सी.वी.सी. इस मामले की जांच दो सप्ताह में पूरी करे. जांच सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस ए.के. पटनायक की निगरानी में होगी. कोर्ट ने अंतरिम निदेशक नागेश्वर राव को कहा है कि वे केवल प्रशासनिक व्यवस्था देखेंगे, कोई नीतिगत निर्णय नहीं लेंगे. जो भी हो परन्तु सी.बी.आई. में चल रहे आरोप प्रत्यारोप के दौर और मामले के तूल पकड़ने से देशवासियों के मन में सी.बी.आई.की भूमिका पर सवाल तो खड़ा होता ही है. जनता का जो भरोसा इस संस्था पर था इस प्रकरण के बाद शायद ही वह कायम रह सके.

हिन्दी में लिखना, पढ़ना सबसे सरल और आसान होता है

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय, में 14 नवम्बर से चल रही विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों के पुरस्कार वितरण के कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के संरक्षक श्री राजकिशोर भारती ने की तथा मंचासीन संस्थान के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एवं सुपरिचित कवि ईश्वर शरण शुक्ल रहे. काव्य पाठ प्रतियोगिता में शिखा मिश्रा- प्रथम, मीनाक्षी सिंह- द्वितीय, हिन्दी गीत प्रतियोगिता में आयुश शुक्ला-प्रथम, बास्केट बाल में नर्सरी के देवांश पाण्डेय, अक्षर प्रतियोगिता में हर्ष जायसवाल, गणित संग्रह में शिवांश पाण्डेय, गोल दौर में कशिश, लेखन में भाग्या कुमारी, यादास्त शक्ति में नव्या मिश्रा, रंगोली में नव्या, नैन्सी और आश्मी, मेहदी में रिया प्रजापति, पल्लवी पाण्डेय, सवोत्तम छात्र का नव्या मिश्रा को दिया गया. साथ ही सर्वोत्तम शिक्षक-2019 का सम्मान नौरीन सिद्दिकी को मिला.

संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने कहा कार्टून, सोसल मीडिया ने नाता तोड़े और किताबों से नाता जोड़े. जब तक हम किताबों के करीब रहेंगे जीवन में आगे बढ़ते रहेंगे. अगर आज हम सोसल मीडिया से नाता जोड़े रहे तो जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ पायेगें. ऐसी प्रतियोगिताओं के माध्यम से बच्चों में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा होती है. हिन्दी में लिखना, पढ़ना सुनना हमारे लिए सबसे सरल और आसान होता है. उन्होंने विद्यालय परिवार को आयोजन में सहयोग करने के लिए धन्यवाद भी दिया. कार्यक्रम अध्यक्ष राजकिशोर भारती ने बच्चों को आगे बढ़ने के लिए कठिन परिश्रम और लगन से मेहनत करने को कहा. साथ ही कहा कि ऐसी छोटी-छोटी प्रतियोगिताएं आगे बड़ी प्रतियोगिताओं में विजयी बनने में सहायक होती है.

इस अवसर पर ईश्वर शरण शुक्ला एवं युवा कवि सधाशु सिंह ने अपनी रचनाओं के माध्यम से बच्चों को जागरूक किया।

कार्यक्रम का संचालन प्रधानाचार्या श्रीमती सपना गोस्वामी और धन्यवाद ज्ञापन मोहित गोस्वामी ने किया.

इस अवसर पर श्रीमती सोना भारती, सुधा सिंह, श्रीमती संध्या दूबे, श्रीमती देवकी सिंह, श्रीमती प्रीति पाण्डेय, रीतिका तिवारी, शशि पाण्डेय, प्रीति शर्मा, प्रभा शर्मा, अंकिता सेटठी, विद्यावती शर्मा, शिखा गिरी सहित विद्यालय से छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे.

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की कार्यकारिणी चयनित

विश्व हिन्दी साहित्य सेवाा संस्थान की वर्ष 2019–21 की कार्यकारिणी का गठन संस्थान की प्रबंध कार्यकारिणी समिति की बैठक में किया गया. चुनाव अधिकारी डॉ० एच.एन. पाल ने बताया कि सुश्री बी०एस० शांताबाई, बंगलौर, कर्नाटक तथा श्री राजकिशोर भारती-प्रयागराज, उ.प्र. को संरक्षक, डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख-अहमदनगर, महाराष्ट्र को अध्यक्ष, डॉ० वीरेन्द्र कुमार दुबे, जबलपुर, म.प्र., श्री महेन्द्र कुमार अग्रवाल-प्रयागराज, उ.प्र तथा डॉ० सोसन एलिजाबेथ, प्रयागराज, उ.प्र. को उपाध्यक्ष, डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी-प्रयागराज, उ.प्र. को सचिव, लेफ्टिनेंट जया शुक्ला-देवरिया, उ.प्र. को प्रबंध/वित्त सचिव, श्री ईश्वर शरण शुक्ल, बहराईच, उ.प्र. को संयुक्त सचिव, डॉ० रेवा नन्दन द्विवेदी-प्रयागराज, उ.प्र. को विदेश सचिव तथा श्री एस.बी. मुरकुटे, बड़गांव, कर्नाटक, श्री मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी, सोनभद्र, उ.प्र., डॉ० कौशलेन्द्र पाण्डेय, लखनऊ, उ०प्र०, श्री हरिहर चौधरी- गंजाम, ओडिसा, श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा को सलाहकार परिषद का सदस्य चयनित किया गया.

राज्यों के प्रतिनिधि के लिए महाराष्ट्र से डॉ० कामिनी अशोक बल्लाल-औरंगाबाद, डॉ० अशोक गायकवाड़-अहमदनगर, डॉ० मेदिनी शशिकांत अंजनीकर, मुंबई, डॉ० विशाला मनीष शर्मा-औरंगाबाद, डॉ० विनोद कुमार दुबे-मांडुप, कर्नाटक से श्री विष्णु राजाराम देवगिरि-बिजापुर, सुश्री जे. वी. नागरत्नमा-शिमोगा, सुश्री जी.एस. सरोजा-शिवमोगा, नई दिल्ली से डॉ० सुखवर्ष कंवर 'तन्हा', मध्य प्रदेश से प्रो० (डॉ०) मधु जैन-भोपाल तथा वंदना अग्निहोत्री-इंदौर, मेघालय से डॉ० अनीता पंडा-शिलांग, हिमाचल प्रदेश से सुश्री निर्मला चन्देल-शिमला, छत्तीसगढ़ से श्री पुरूषोत्तम सिंह राठौर-चाम्पा, राजस्थान से डॉ० वली उल्ला खां फरोग-अजमेर, सुभाष सोनी 'अनाम'-रावतसर, डॉ० विजय कुमार पटीर-रावतसर, असम से सुरेश कुमार सोनी-गुवाहाटी, उत्तर प्रदेश से श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी-सोनभद्र, डॉ० हितेश कुमार शर्मा-बिजनौर, श्री रमेश चन्द्र त्रिवेदी-पीलीभीत, डॉ० सरोज गुप्ता-आगरा, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली'-रायबरेली, श्री निगम प्रकाश कश्यप-मिर्जापुर, डॉ० अमित कुमार दूबे-आजमगढ़, श्री प्रभाषु कुमार-प्रयागराज, श्रीमती वंदना श्रीवास्तव 'वान्या'- लखनऊ चयनित किया गया.

संस्थान सचिव डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने बताया कि सभी चयनित पदाधिकारियों को उनके अधिकार एवं दायित्व की पत्रावली उनके ई-मेल व डाक से प्रेषित की जा चुकी है. आप सब अपने कार्य में अभी से जुट जाए ताकि संस्थान द्वारा दिये जाने वाले सर्वोत्कृष्ट कार्य के लिए विहिसा सरताज तथा हिन्दी सांसदों को दिए जाने वाले सर्वोत्कृष्ट हिन्दी सांसद-वर्ष .... के क्रम में आ सके. साथ ही समाज सेवा और हिन्दी सेवा करने का बीड़ा जो आप सबने उठाया है उसका परिपालन हो सके.

सुना था लोगों से की वक़्त भी बदलता है.
अब वक्त ने बताया लोग भी बदलते हैं.

लघु कथाएं

देवी

दफ्तर से छुट्टी का समय था. तीन-चार जवान लड़कों में आपस में खुसफुसाहट हो रही थी. उनमें से एक लड़का अनाड़ी था. बाकी के शायद इन सब बातों के लिए तैयार थे. भली यार आज इस नये पंछी को वहां की सैर करा देते हैं. रोज सुबह दफ्तर में आ वह अपने काम में इस कदर डूब जाता कि उसे सिर उठाने की फुरसत नहीं होती थी. क्योंकि उसे मालूम था कि घर में उसके बूढ़े माता-पिता को इसी बेटे की आमदनी का सहारा हैं. अभी तो इसकी नयी-नयी नौकरी लगी थी. वह दिन-रात मेहनत कर जीवन में आगे बढ़ना चाहता था. ''अरे श्याम अभी तो तुम्हें इस दफ्तर में आये कुछ ही महीने हुए हैं. अभी तो अपने आप को काम में तथा मेहनत उलझाने लगे हो. अपने ऊपर जितना बांध लोगे उतना ही तंग होओगे. यह अफसर लोग तुम्हें पूरा गधा बना देंगे.'' ''तो ठीक है यार खाली बैठ कर बेगार खाना भी तो ठीक नहीं होता.'' ''हां देख हम तो थोड़ा बहुत काम कर आराम फरमाते हैं. तू तो सिर दर्द मोल ले रहा हैं। चल कही घूमने चलते हैं.''

''नहीं यार अभी तो छह बजने में आधा घंटा बाकी हैं. हम कब तुम्हें अभी कह रहे हैं. चलो छुट्टी के बाद चलेगें.'' फिर वह सब आपस में एक दूसरे को देख कर हंस दिए.

''चलो यार माना तो सही. इस नये पंछी को वहां की सैर करा देते हैं. तुम्हें क्या पता यह नया पंछी है या पुराना. क्या पता यह छूपा रूस्तम हो? चलो आज पता लग ही जायेगा.

श्याम इस बात पर हैरान होता था कि यह रोज चार बजने के बाद आपस में न जाने क्या खुसर-फुसर करते हैं. सब इकट्ठे होकर दफ्तर की बिल्ड़िग से बाहर निकले-चल यार आज तुझे एक चीज दिखाते हैं. पहले वह भी थोड़ा हिचकिचाया लेकिन फिर उनके साथ चल पड़ा बाते करते हुए वह सब रेड़ लाइट एरिया में पहुंच गए. वहां का हिसाब-किताब देखकर श्याम थोड़ा घबरा गया. यह तो 'रेड़ लाईट' एरिया हैं. मुझे कहां ले आए? ''चल अन्दर तो चल उसके साथियों ने उसे ऊपर की तरफ खीचते हुए कहा. 'तू चल तो यार तुझे एक बढ़िया चीज दिखाते हैं.'' ऊपर जाकर बाकी के तीन अपने-अपने काम में व्यस्त हो गये. इसे भी एक सुन्दर सी लड़की के पास छोड़ गए. उसकी सुन्दरता देखकर कोई भी मोहित हुए बिना नहीं रह सकता था. वह उसे छूने की कोशिश करने लगा। लेकिन न जाने अचानक क्या हुआ वह सुन्दर लड़की शायद भाप गई कि यह नया पंछी हैं। उसकी सुन्दरता और आकर्षक शरीर देख उस लड़की ने कुछ निर्णय लिया और कहा, मैं तो काठ की हांड़ी हूँ। एक बार चूल्हे पर चढ़ गई तो चढ़ गई तो फिर किसी काम की नहीं रहती। तुम मुझे अच्छे घर के लगते हो। स्वास्थ्य भी ठीक लगता हैं। तुम जीवन में किसी अच्छे से खानदान की अच्छी सी लड़की से शादी कर अपना घर बसा लो। देखो तुम इस कीचड़ में मत गिरो। क्यों अपनी जवानी बरबाद करना चाहते हो। तुम मुझे नेक लड़के लगते हो। इन गलियों में बर्बादी के सिवाय कुछ भी नहीं। क्यों कुछ लोंगों के कहने पर गलत स्थान पर आ गए हो। मैं तो चाहूंगी कि तुम वापिस लौट जाओं इसलिए यह लो अपने पैसे जीवन में कभी भी ऐसी गालियों में मत आना। चाहे तुम्हें कितना भी कोई लालच दे।'' उसे हैरान परेशान छोड़कर वहां से मुड़कर वह दूसरे कमरे में चली गई। कुछ देर के लिए यह ठगा सा खड़ा रहा उसने सिर झुका लिया फिर उसकी सच्चाई और नसीहत उस लडके ने मान ली तथा वह वहां से अपने दोस्तों को बिना बताए ही लौट गया। फिर जीवन भर उसने ऐसी गलियों का कभी रूख नहीं किया। वह उस सुन्दरी का अति शुक्रगुजार है कि उसने उसे कीचड़ में गिरने से बचा लिया। जिन्हें लोग गिरा हुआ समझते हैं वही गिरने से बचाती भी हैं। वह नेक दिल भी होती हैं उसे ख्यात आया कि हो सकता है किसी मजबूरी की वजह से इस कीचड़ में गिरी होगी लेकिन मेरे लिए तो वह देवी बन कर उभरी हैं। ऐसा सोचता रहा वह जीवन भर।

-सुखवर्ष कुवरं तन्हा, नई दिल्ली

फेसबुक मित्र

मेरे एक मित्र अति आधुनिकतावादी हैं. उनकी अति भौतिकवादी विचार धारा ने उन्हे आम आदमी से अलग कर दिया है। आफिसियल ड्यूटी से मतलब रखते हैं। जरा भी खाली समय मिला वे अपने एप्पल ''४जी, एण्ड्रोड मोबाइल के साथ गोण्ड़ी में व्यस्त हो जाते हैं। सहकर्मियों से भी हाय हैलो तक का मेल जोल था।

एक दिन बड़े गर्व से बोले ''विद्रोहीजी, आपको पता है फेसबुक पर मेरे चालीस हजार मित्र जुड़ गये हैं! मैंने कहा! कपूर साहब सचमुच बड़ी उपलब्धि हैं उनको बुरा न लगे इस लिये उनकी बात का समर्थन करते हुए मैंने उनके मन की

बात कह दिया! कान्हो उचकते हुए बोले हैं। ऑलओवर इण्ड़िया में हमारे मिश्र हैं। मैंने कहा मोहल्ले में कितने मिश्र हैं। बुरा सा मुँह बनाते हुए छोडों यार में गवार अनपढ़ लोगों से ज्यादा सम्बंध नहीं रखना कुछ समय बाद उनके बीमार पिता का इन्तकाल हो गया, मुझे कॉल आया, बोले विद्रोही जी पिता जी नहीं रहे हैं। मेरी मदद करे, मैंने कहा मैं शीध्र पहुँच रहा हूँ। वे बोले पहले तो पिता को शमशान ले जाने के लिए शवबाहिका बेन को कॉन्ट्रेक्ट नम्बर दो, और दो चार मित्रों को भी साथ ले आना" मैंने कहा और वे चालिस हजार फेसबुक मित्रों को सूचना दी या नहीं. वे निरुत्तर हो गये, हालाकि ऐसे समय में यह बात करना उचित नहीं थी, पर में उनके मर्म पर चोट करना चाहता था, उनकी आत्मा को जगाने हेतु ऐसा कहना पड़ा था, मैं रास्ते में यह विचार करता उनके निवास की ओर चल पड़ा कि संचार क्रांति ने हमें हमारे अपनो से किस कदर अलग कर दिया है। कहने को चालीस हजार फेसबुक मित्र है। लेकिन पिता कि अर्थी के कन्धा देने वाले चार मित्र नहीं हैं। सचमुच ये कैसी विडम्बना हैं वक्त की हमारे संयुक्त परिवार के नाम पर बेबी, बीवी टी०वी० और गंदी हैं। मॉ बाप भाई बहिन को कोई स्थान नहीं हैं। लैपटाप, मोबाइल के फेसबुक मित्र तो हैं। पर ऑसू पोछने वाले मित्र नहीं हैं।

-**शबनम शर्मा,** सिरमौर, हि०प्र०

बोनस

अपने मोबाईल पर रिचार्ज के एक साथ 6 मैसेज पाकर मैं खुशी से झूम उठा। मैनें रास्तें में 200रू का एक रिचार्ज करवाया था मगर यहां तो 6 रिचार्ज का बैंलेंस 1200 रू मेरे मोबाइल फोन में आ गये थे। मुझे मित्रों से मोबाइल फोन पर बात करने का मानो बोनस मिल गया था। अब दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई में बैठे मित्रों से खूब बातें होगी मुफत का टॉकटाईम जो मिल गया था। तभी मेरे मन मस्तिष्क पर वह मासूम बालक नजर आने लगा, जिससे मैंने उस दुकान पर रिचार्ज करवाय था। वह शायद दुकान का नौकर था। पहली बार रिचार्ज कन्फर्म नहीं होने पर वह अपने मोबाईल फोन से ई-टाॅप माध्यम से बार-बार प्रयास करने लगा। आखिर में उसने कहा कि अंकल जी, लगता हैं मोबाईल कंपनी का सर्वर डाउन हैं, आप पैसे दे जाये, आपका फोन रिचार्ज हो जायेगा, थोड़ा समय लग सकता हैं। मैं अविश्वास से उसे 200 रू देकर दुकान से बाहर निकल गया। कुछ समय बाद मेरे फोन पर 6 बार रिचार्ज का संदेश मिल गया जिसका तात्पर्य हैं कि उसने 6 बार ई टाप से प्रयास किया। उसकी दुकान खाते से 1200 रू निकल कर मेरे मोबाईल फोन पर आ गए। इस आकस्मिक बोनस टॉक टाईम से खूब बातें करने का मौका मिलेगा, मगर उस मासूम बालक के जीवन में क्या गुजरेगी, सोचकर मैं सिहर उठा मुझे मिला सारा अतिरिक्त टॉक टाईम का हर्जाना उसे भुगतान पड़ेगा। मेरी खुशी पर ब्रेक लग गया, मेरा मन बेचैन हो उठा। मेरे कदम उस दुकान की ओर बढ़ चले जहां से मैंने यह फोन रिचार्ज करवाय था। मालिक को इस बात का पता नहीं था, मालिक को अतिरिक्त टॉक टाईम के पूरे पैसे अदा करते हुए मैंने उनसे वचन लिया कि उस बालक को कोई सजा न देंगे। उस मासूम की आंखो में कृतज्ञता के भाव देखकर मैं सुकून महसूस कर रहा था। वह मेरे लिए आत्मसंतुष्टि का बोनस था।

-**अशफाक कादरी,** बीकानेर, राजस्थान

श्रद्धा

काँवरिया हरिद्वार से आकर दिल्ली में भगवान शिव पर गंगाजल चढ़ाते है। जगह-जगह काँवरियों के लिए पंडाल लगे होते है। काँवरिया थक जाने पर वहाँ निःशुल्क खाते हैं एवं आराम करते है। शिव की आराधना भी करते हैं। एक पंडाल आजादपुर में भी लगता है। वहाँ के एक निवासी महेन्द्र सिंह है। ये छह-सात साल से इस कैम्प की व्यवस्था करते रहे है। सभी काँवरिये अपने-अपने काँवर लेकर चले जाते हैं फिर भी एक काँवर वहाँ पड़ा रह जाता है। यह देखकर ये बड़े ही आश्चर्य चकित हो जाते है। बाद में ये जब पूर्ण रूप से निश्चित हो जाते है कि अब यहाँ कोई भी कावरियाँ नहीं बचा है। इनके मन में तो श्रद्धा है कि एक बार स्वयं हरिद्वार गंगाजल लाकर, शिव पर चढ़ाएँ। लेकिन भगवान शिव देखते है कि इतनी उम्र हो गयी है, वहाँ से गंगाजल ये नहीं ला सकते हैं इसलिए स्वयं एक काँवर गंगाजल के साथ यहाँ छोड़ देते है! ऐसा निरन्तर होता आ रहा है। स्वयं महेन्द्र सिंह ऐसा देखकर आश्चर्य चकित है!

-**डॉ० सूरज मृदुल**

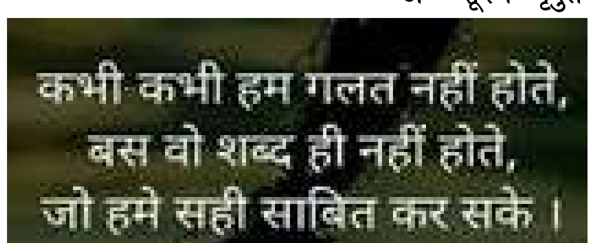

नया घर

-पुष्पा मिश्रा, इलाहाबाद, उ.प्र.

मई का महीना गर्मी और सूर्य की तपन से भरपूर. प्रचंण्ड गर्मी के कारण रात के समय भी पंखे की हवा गरम लग रही थी. रात देर से नीद आई थी अतः सुबह आँख देर से खुली. पति प्रातः भ्रमण के लिए निकल गए थे. मैं उठकर नित्यक्रिया से निवृत्त होकर चाय लेकर बैठी थी. चिड़ियों की चहचहाहट सुन रही थी. सोचा चाय पी लूँ तो छत पर पड़ें सूखे गमलों में पानी डालूँगी.

अभी प्याला मुँह को लगाया ही था कि फोन की घंटी बजने लगी. पता नहीं सुबह-सुबह किसका फोन है सोचते हुए फोन उठाया और हलो कहा-उधर से बेटे और बहू की चहकती हुई आवाज सुनाई पड़ी, ‘‘मम्मी जी प्रणाम! हम लोगों ने नया मकान खरीदने के लिए पसंद कर लिया है. आप लोगों की आशीर्वाद लेने के लिए फोन किया है. एक महीने के भीतर ही नए घर में शिफ्ट होगें. आप लोगों को भी आना है. घर की फोटो व्हाट्सएप पर भेज दी है.

मैंने भी खुश होते हुए दोनों को आर्शीवाद दिया और फोन रख दिया. खुशखबरी सुनाने के लिए पति की टहल कर लौटने की प्रतिक्षा करने लगी, और मन अतीत के गलियारों में विचरने लगा.

मेरे बेटे, बहू और पोता अमेरिका में रहते है. बारह वर्ष पहले बेटा उच्च शिक्षा के लिए विदेश गया था और बाद में वहीं उसकी नौकरी लग गई. वह प्रतिवर्ष या दो वर्ष में एक महीने के लिए घर आता है. यहाँ भारत में ही उसने परिवार की पंसद की एक लड़की से विवाह किया और कुछ समय पश्चात् पत्नी को भी ले गया. इस समय मेरा पोता भी सात वर्ष का है, और फरवरी में ही सब हम लोगों से मिलाकर गए है.

बच्चों के मुँह से अपना घर लेने की बात सुनकर मैं और अतीत में भटकने लगी. बीस वर्ष की उम्र में मेरा विवाह हुआ था. पति सशस्त्र सेना में कार्यरत थे. मैने ग्रेजुएशन किया था. व्याह कर ससुराल आई सबने बहुत सम्मान से हाथों हाथ लिया. सास-ससुर देवर और छोटी ननद परिवार में थे. बड़ी ननद का विवाह हो चुका था. जेठ अपने परिवार के साथ बंगलोर रहते थे. उनका घर से कोई संबंध नहीं था. कारण मुझे नही पता और नई होने के कारण मैंने कुछ पूछना उचित नहीं समझा. पूरे गाँव स्त्री शिक्षा का चलन उस समय नही के बराबर था.

एक दिन मेरे चचिया ससुर ने मेरा हाथ देखने की इच्छा प्रकट की. मैंने अपनी हथेली उनके सामने कर दी. उन दिनों गाँव में परदा प्रथा का बहुत चलन था मैं भी लम्बा घूँघट निकाल कर जमीन पर बोरी बिछाकर बैठी थी. हथेली देखते ही चाचा जी ने कहा तुम्हारी रेखाओं में तीन घर हैं यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूँ. चाचा जी बात सुनकर मैं सोच में पड़ गई कि घर के नाम पर ससुराल में एक कमरे का खपरैल का घर और एक छोटा सा आंगन. आंगन के एक कोने में रसोई बनती थी और एक कोने में पत्थर बिछा था जहाँ स्नान आदि कार्य होता था. पानी भी बाहर कुँए से भरकर लाना पड़ता था. बारिश होने पर कमरे का ही एक कोना रसोई का काम करता था. खपरैल से पानी भी कहीं न कहीं से टपकता था. पति की आय से ही पूरे घर का खर्च चलता था और अब तो मैं भी परिवार में शामिल हो गई थी.

मैं धीरे-धीरे परिवार में घुलमिल गयी. परिवार वालों का प्यार व सम्मान पाकर मैं अभिभूत थी. कुछ दिनों बाद पति की छुट्टियाँ खत्म हो गई तो वे पुनः अपनी ड्यूटी पर चले गए और कुछ दिनों बाद किराए का मकान देखकर मुझे भी अने पास बुला लिया. मैं भी अपनी गृहस्थी में रम गई. मेरे मायके में स्त्री शिक्षा पर काफी ध्यान दिया जाता था. मेरी स्वयं की नानी उस जमाने में ग्रेजुएट थी. अतः मेरे

पिता जी ने पत्र द्वारा इनसे कहा कि अगर इनको कोई एतराज न हो तो तुझे आगे की शिक्षा जारी रखने को कहें. पिताजी की इच्छा एवं पति के प्रोत्साहन से मैने अनमने मन से ही सही लेकिन परास्नातक की पढ़ाई प्रारम्भ की एवं दो वर्ष बाद संस्कृत से एम०ए० किया तथा शिक्षक का प्रशिक्षण भी पूरा किया.

पढ़ाई के दौरान ही मेरे दो बेटियाँ भी हुई, मेरे पढ़ाई में कोई विध्न नहीं आने पाया. मेरे ससुराल वाले बहुत पुराने विचारों के थे किन्तु उन्होंने भी मुझे हमेशा प्रोत्साहित ही किया. एल०टी० प्रशिक्षण के बाद मुझे एक बेटा भी हुआ.

बच्चे धीरे-धीरे बड़े होने लगे और आर्थिक स्थिति डाँवा डोल रहने लगी. लेकिन हम दोनों पति-पत्नी कभी घबराए नहीं. फिर मैंने भी आर्थिक स्थिति में सहयोग देने का मन बना लिया. इस बीच कई जगहों पर इनका स्थानान्तरण होता रहा, और मैं भी इसके साथ जाती रही परन्तु छुट्टियों में हम अवश्य दो महीने के लिए बच्चों को लेकर अपनी ससुराल और मायके अवश्य जाती थी जिससे बच्चे हमेशा परिवार एवं संस्कारों से जुड़े रहें.

जिस समय हम लोग चण्डी मंदिर स्टेशन पर थे मैंने वहीं घर में लोगों को सिलाई सिखाना शुरू कर दिया क्योंकि हाईस्कूल एवं इण्टर की छुट्टियों के दौरान सिलाई का प्रशिक्षण लिया था. इससे मुझे आमदनी भी होने लगी और आत्मविश्वास भी बढ़ने लगा. अभी सिलाई सिखाते मुझे डेढ़ वर्ष ही हुए थे कि इनका स्थानान्तरण बागडोगरा हो गया. सेना में होने के कारण बच्चों को केन्द्रीय विद्यालय में दाखिला दिलवा दिया था अतः उनकी पढ़ाई में कोई समस्या नहीं थी. हम सब भी बच्चों को परीक्षा के बाद बागडोगरा पहुँच गए. मेरा सिलाई का काम तो छूट ही गया था. इसी बीच मैं यह सोचकर परेशान रहने लगी कि सेना में तो जल्दी सेवानिवृत्ति हो जाती है और गाँव में पढ़ाई की कोई सुविधा है नही तो बच्चे विशेषकर लड़कियों की पढ़ाई का क्या होगा, और आर्थिक स्थिति फिर वही की वहीं रह गई. इसी समय मैंने विकास प्राधिकरण का विज्ञापन देखा और मकान के लिए रजिस्ट्रेशन करा लिया. पहले पति ने मना किया परन्तु बाद में तो वो भी मान गए.

''जहाँ चाह वहाँ राह'' बागडोगरा में पहुँचने के दो महीने के अन्दर मेरी केन्द्रिय विद्यालय में नौकरी लग गई (अस्थायी शिक्षिका की) और डेढ़ वर्ष होते-होते मैं स्थाई हो गई. अब आर्थिक समस्या पूरी तरह सुलझ गई थीं. बच्चे भी बड़े-बड़े हो गए थे और उसी विद्यालय में पढ़ते थे तो उनकी कोई समस्या नहीं थी. अब तक मैं अपने चचिया ससुर की बात को भूल गई थी. इस बीच ननद का विवाह भी हो गया था और वे भी अपने ससुराल चली गई थी तथा देवर भी कुछ न कुछ करने लग गए थे और उनका विवाह भी हो गया था. ये सब जिम्मेदारियाँ हम पति-पत्नी के ऊपर ही थी सो हमने भी उसे पूरी निष्ठा एवे श्रद्धा से पूरी की. इसी बीच हमें इलाहाबाद से विकास प्राधिकरण मकान भी मिल गया. अब गाड़ी पटरी पर चल निकली थी. एक के वेतन से परिवार का खर्च और दूसरे मकान की किश्ते पूरी होने लगी. तीनों बच्चे भी पढ़ने में काफी अच्छे थे इसलिए हम लोग भी खुश थे. घर का मकान भी देवर ने तथा इन्होंने मिलकर काफी अच्छा बनवा लिया था. इनकी सेवानिवृत्ति का समय पास आ रहा था. मैं पोस्टिंग के कारण बच्चों के साथ अलग स्टेशन पर रहती थी तथा ये अलग.

इतने में डोर बेल बजी और विचारों का क्रम टूट गया. देखा काम वाली बाई आई थी उसे काम बताकर मैं पुनः बैठ गई. चाय ठंडी हो चुकी थी और पीने की इच्छा भी नहीं थी. सोचा जब ये टहल कर आएगें तब पुनः बना लूँगी.

समय अपनी गति से चलता रहा और मैं अविरल उसमें बहती रही. बच्चे बड़े हो गए शिक्षा पूरी करते-करते उनका अच्छी जगह देखकर विवाह भी कर दिया. बड़ी बेटी डाक्टरेट करके अंग्रेजी की प्रवक्ता है तथा उसके पति कस्टम सुपरिटेन्डेन्ट हैं. छोटी बेटी विश्वविद्यालय में उपकुलसचिव हैं तथा दामाद बिजनेस मैंन है. बेटा और बहू अमेरिका में है. बेटा इन्जीनियर तथा बहू भी नौकरी करती थी. मेरी असली पूँजी मेरे तीनों समझदार बच्चे तथा दामाद और बहू हैं.

आज जब बेटे का फोन आया तो मुझे अचानक अपने चचिया ससुर की चौवालिस साल पुरानी बात याद आ गई कि तुम्हारे हाथों की लकीरों में तो तीन घर है. जो कभी मैं सपने में सोचती थी आज सच हो गया. गाँव का पुश्तैनी मकान, इलाहाबाद में घर तथा तीसरा अमेरिका में जो आज बेटे के फोन से पता लगा. मेरा मन अपने ससुर के प्रति श्रद्धा से भर उठा और आँखे आसुओं से भर गई. मैने मन ही मन उनको प्रणाम किया और श्रद्धाजंली दी क्योंकि उन्हें तो दुनिया से गए काफी वर्ष बीत चुके है. अब तक काम करने वाली जा चुकी थी. पति भी टहल कर आ गए. मैं भी खुशी-खुशी बच्चों का समाचार देने के लिए गेट खोलने लगी.

भारत में ऑर्थोराइटिस की बढ़ती समस्याएँ

-डॉ० अरुण कुमार आनन्द

विभिन्न प्रकार के शरिरिक व्यधियों (रोगों) पर आयुर्वेदिक वैज्ञानिकों द्वारा किए गये सर्वेक्षण के अनुसार मरीजों की संख्या भारत में 85% (जनसंख्या के अनुपात में) पाया गया है, जिसमें गठिया रोग (ऑर्थोराइटिस सवाईकल स्पोन्डलाइरिस) से पीड़ित रोगियों की संख्या 65.10% है. पीठ, कलाई, कमर के जोड़ो का दर्द जैसी समस्याओं का अनुपात लगभग 45 से 50% होता है सर्दियों में इस रोग की समस्याए आमतौर पर बढ़ जाती है. अर्थात जिन्हें सवाईकल स्पोन्डलाइरिस आस्टियों ऑर्थोराइटिस को समस्यांए है, को वर्षा ऋतु और शरद ऋतु में यह रोग विकराल रूप धारत करता है. आमतौर पर गठिया की समस्या 35 वर्ष की आयु के बाद प्रारंम्भ होता है, और 60 वर्ष की आयु तक पहुंचते-पहुंचते मरीज चलने-फिरने, उठने बैठने से अस्मर्थ हो जाता है. इस ऑर्थोराइटिस को थर्डस्टेज को लाईलाज माना गया है. गठिया का दर्द असहनिय और अत्यन्त पीड़ादायक होती है जिस पर कोई भी दर्द निवारक औषधि प्रभावशाली नही होता है. यह समस्या उन लोगों में अधिकतर होता है, जो 12 घंटे एक अवस्था में बैठकर कार्य करते हैं जैसे क्लर्क, कम्प्यूटर आपरेटर, दुकानदार (जो एक ही जगह पर बैठे रहते हैं.) कुर्सी पर एक ही अवस्था में 4 से 6 घंटे तक बैठे रहने वाले लोगों या विद्यार्थियों में भी ऑर्थोराइटिस के प्रांरभिक लक्षण देखने में आया है. भारत में अधिकतर लोग इस समस्या को गंभीरता से नहीं लेते या दर्द निवारक दवाओं पर निर्भर रहते हैं. केवल दर्द निवारक औषधियों का सेवन इस रोग का कम्पलीट समाधान नही हैं, और रोग अन्दर ही अन्दर बढ़ता रहता है, अंततः व्यक्ति अपहिज का जीवन जीने को विवस हो जाता है.

ऑर्थोराइटिस रोग का अभी तक भारत में किसी भी थेरिपि में पूर्ण कारगर उपचार नही है. केवल रोकथाम की औपचारिकता मात्र है. आयु बढ़ने के साथ-साथ गठिया रोग भी बढ़ता रहता है, यदि समय पर प्रारंभिक अवस्था में उपचार नहीं हुआ तो रोग विकराल हो जाता है फिर उपचार करना कठिन हो जाता है. समस्या के बढ़ जाने पर डाक्टर के पास जाते हैं तक तक रोग लाईलाज हो चुका होता है. किंतु यह सोच हानिकारक है एलोपैथिक उपचार से कुछ लोगों को आराम तो मिलता है, लेकिन रोग जड़-मूल से समाप्त नही होता. शेष ईश्वर इच्छा या किस्मत को ही उत्तरदायी मानकर ता उर्म कष्ट उठाते हैं. यदि समस्या का सुक्ष्म विश्लेषण किया जाए तो उसका मूल कारण समझ में आ जाता है. इसका मूल कारण है, आयोडीन और कैल्सियम तत्वों के मिश्रण से हड्डियो के जोड़ों में बनने वाला गाढ़ा तरल पदार्थ जिसे मानव शरीर में बनने वाला ग्रीस, जब गाढ़ा होकर जमने लगता है तो जोड़ों में दबाव पड़ने से जोड़ धिसने लगते हैं और 'ऑर्थोराइटिस' का दर्द उत्पन्न हो जाता है. इसके लिए सुगम उपचार यह है कि शरीर में आयोडीन और कैल्सियम की कमी न होने दिया जाया जोड़ों के ग्रीस को जमने का मौका न मिले. सर्वोत्तम उपचार हैं, ग्लूकोमाइन्स तत्व को बरकरार रखने को. इसके लिए मशरूम सर्वोत्तम एवं कारगर उपचार है. अधिक से अधिक मात्रा में खाद्य पदार्थो में मसरूम का प्रयोग जो जोड़ों के ग्रीस को जमने नहीं देता. बाजार में नोनी-स्प्रूलीना-गैनोर्डमा और ग्लूकोस्माईन नामक कैपसूल प्रचूर मात्रा में उपलब्ध ा है. इसके साथ 'गज केशर चूर्ण' का शीलाजीत के साथ नियमित सेवन किया जाए तो मनुष्य इस कष्ट साध्य रोग से जीवन भर मुक्त रह सकता है.

सवाईकल स्पोन्डलाईटस ऑर्थोराइटिस मनुष्यों के खान-पान उठने बैठने रहन सहन स्थान से संबंध होता है, यदि मनुष्य खान-पान, रहन-सहन वस्तुओं की स्पैट्रम अनालेसिस करे तो उसमें निहित रंगीन ऊर्जा दर्शन होते है, इन्ही

शेष पृष्ठ ३२ पर...............

विरंगी ऊर्जा से समस्त प्रकार के रोगों का समावेश होता है, क्योंकि इन सभी वस्तुओं में सूर्य अल्टावेजींय किरणों का प्रभाव रहता है. यह ऊर्जा जब अल्ट्रावेज किरणों के द्वारा मानव शरीर में पहुंच जाती है तो रोग के विषाणुओं पर प्रहार करके उन्हें नष्ट कर देते है. जोड़ों के ग्रीस तत्वों को जमने से रोकने में भी सौर ऊर्जा का बड़ा महत्व होने के साथ-साथ यह बिन्दूक अणु जो ग्रीस में जर्म होता है को उर्त्सजित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है. सवाई कल स्पेन्डीलाइटिस ऑर्थोराइटिस रोग उत्पन्न होने का यही मुख्य कारण है. प्याज, गाजर, करेला लौकी, अरवी में 02 से 03 प्रतिशत और कमल गट्ठा एवं मसरूम में 06 से 07.5 प्रतिशत तक 'मैटाबोलिक एवं 'ग्लुकोमैटासिन' तत्व होता है जो (गठिया) जोड़ों के ग्रीस को जमने से रोकता है. 'रंगीन उर्जा' (कॅलरोट्रावेज) विकिरणे एक सीमा तक शरीर में बढ़ने से रोकती है, जिसमें लाल पीली विकिरणें विशेषता-महत्वपूर्ण एवं प्रभावी होती है, जो जोड़ों के दर्द को रोकने में सफल है. शेष 'कलरट्रावेज' किरणें शरीर से बाहर निकल जाती है. इन निकलती हुई ऊर्जा किरणों को यंत्रिक विधि से कम्प्यूटर के डिस्प्ले में देखा जा सकता है. जरूरत पड़ने पर 'बायोस्पी' भी ली जा सकती है, से गठिया रोग का आसानी से पता चल जाता है. स्थिति भी जानी जा सकती है. इसे चिकित्सकगण ओरास (ORAS) के नाम से जानते हैं. यही रंगीन ऊर्जा विकिरणें शरीर में रूकी हुई ऊर्जा का प्रत्येक रंग शरीर के किसी विशेष अंग (सिस्टम) के कार्यो को नियंत्रित करता है. यदि विकिरणों की मात्रा कम या अधिक होने पर शरीर को कार्यप्रणाली गड़बड़ा जाती है. जिसका प्रभाव रीढ़ की हड्डियों से लेकर शरीर के समस्त जोड़ो (विशेष कर घुटनों के जोड़ों) पर अधिक पड़ता है, तो सवाइकल स्पोन्डलाईटिस ऑर्थेराइटिस का रोग प्रारम्भ हो जाता है. जोड़ों के दर्द में रूटो आयल, अलसी तेल में दो बूंद तारपीन तेल एवं दो बूंद स्प्रीट मिलाकर मालिस करने और मैग्नोफाईग्लास के फोकस से सूर्यताप किरणों का प्रभाव डालने से दर्द में राहत तो मिलता है, किंतु यह स्थाई उपचार नही है. इसका

स्थाई उपचार ग्लूकोस्माईन गैनोड्रमा, नोनी ही है, जो बाजार में उपलब्ध है. साथ में लावण्य भस्मादि का प्रयोग भी आवश्यक है.

शरीर में रोकी गई कलस्ट्रावेज विकरणें हो ''वाइअर्लट'' यानि 'रोगप्रति रोधक क्षमता'' होती है. एक ही प्रकार का फास्टफूड या खाद्य पदार्थ का प्रतिदिन सेवन करना उठने-बैठने के तरीकों का शरीर में जबरदस्त प्रभाव पड़ता है, यदि मनुष्य ऐसी जगह रहता है, जहां धूप और हवा नही पहुंचती, विभिन्न प्रकार का रोग उत्पन्न हो जाता है. जिसमें ऑर्थराइटिस भी शामिल है. स्वच्छ जल-वायु वातावरण भी स्वास्थ के लिए जरूरी है.

बड़े शहरों-कस्बों में लोग घुप्प अंधेरे मकानों-कमरों में निवास करते हैं, जहां रंगीन सौर ऊर्जा की किरणें नहीं पहुंचती, स्वच्छ हवा भी अवरूद्ध रहता है, कारण रोग-बिमारी का कारण बनता है. जहां धूप और हवा का अभाव हो वहां मनुष्यों में असाध्य रोगों का उत्पन्न होना स्वभाविक ही है. सवाईकल स्पोन्डलाइटिस ऑर्थराइटिस रोग होना भी स्वभाविक ही है. अंधेरे कमरों में रहने वाले लोगों का डब्लू०एच०ओ० ने सर्वेक्षण किया तो उनमें 70 प्रतिशत लोग मोटापा, टी०बी० गठिया मासपेशियों के दर्द से पीड़ित पाये गये 40 प्रतिशत लोग उदर विकार दमा कब्ज से पीड़ित पाये गये.

हवादार सौर किरणों से युक्त खुले मकानों में रहने वाले लोग 80% रोगमुक्त और स्वस्थ पाये गये. विशेष कर बाजारू फास्टफूड और प्रदूषित जल भी विभिन्न रोगों का मुख्य कारण है. सौर विकिरणों में शरीर का एकसपोजर भी बहुत आवश्यक है. जो लोग ए०सी० कमरों में निवास करते हैं या फामवाले पलंग में सोते है, वे ही लोग अधिकतर बिमारी के शिकार होते है. नित्य व्यायाम करने और तख्त पर सोने वाले लोगों के जीवनभर गठिया (ऑर्थाराइटिस) रोग नही होता. एकहद तक एलौपैथिक चिकित्सा एवं औषधियां भी गठिया रोग को बढ़ाने में मदद गार होती है, क्योंकि गठिया रोग का 'एलौपैथि' में कारगर उपचार नही है, दर्द निवारण जरूर है, वह भी स्थाई रूप में दर्द का समाप्त नही होता.

इस रोग में ''कलर अल्ट्रावेव'' चिकित्सा सफल एवं कारगर पाया गया है. जिसे

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1–20 वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः पं. नेहरु सम्मान(देश हित व समाज सेवा), श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मृति सम्मान (हिन्दी व साहित्य सेवा), श्री गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान(समाज सेवा), बचपना सम्मान (किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) **2–20 से 40 वर्ष के लिएः** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए), निर्भया सम्मान-(महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किए गये कार्य के लिए), पत्रकारश्री (पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान), 3–**40 वर्ष से ऊपर के लिएः** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), पत्रकार रत्न (पत्रकारिता/संपादन के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), समाज शिरोमणि (समाज सेवा के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), काव्य शिरोमणि (काव्य की किसी भी एक विधा पर एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित), साहित्य शिरोमणि (समग्र साहित्य लेखन, एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित) **4-सभी आयु वर्ग के लिएः हिन्दी सेवियों के लिए**ः विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान (हिन्दी की विशेष सेवा के लिए), **राष्ट्रभाषा सम्मान** (हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के हिन्दी प्रेमियों के लिए जो हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार व लेखन कार्य कर रहे है), **राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **शिक्षकश्रीः** (शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए), **विधिश्री**-(विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए) **5**-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं. इनके लिए कम से कम 100 पृष्ठों की किसी एक विषय पर साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-**1–20 वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः** पं. नेहरु सम्मान(देश हित व समाज सेवा), चन्द्रावती देवी सम्मान (हिन्दी व साहित्य सेवा), गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान(समाज सेवा), बचपना सम्मान (किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) **2–20** से **40 वर्ष के लिएः** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए), पवहारी शरण द्विवेदी सम्मान(समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए) निर्भया सम्मान-(महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किए गये कार्य के लिए), पत्रकारश्री (पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान), कलाश्री(कला (नाटक/गायन/वादन/चित्रकला, नृत्य) के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), समाजश्री (समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), काव्यश्री (काव्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), व्यंग्यश्री (व्यंग्य-गद्य/पद्य लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), कहानीश्री (लघुकथा/कहानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए) 3–**40 वर्ष से ऊपर के लिएः** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), पत्रकार रत्न (पत्रकारिता/संपादन के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), समाज शिरोमणि (समाज सेवा के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), काव्य शिरोमणि (एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित), साहित्य शिरोमणि (समग्र साहित्य लेखन, एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित) **4-सभी आयु वर्ग के लिएः हिन्दी सेवियों के लिए**ः विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान (हिन्दी की विशेष सेवा के लिए), **राष्ट्रभाषा सम्मान** (हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के हिन्दी प्रेमियों के लिए जो हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार व लेखन कार्य कर रहे है), **राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **शिक्षकश्रीः** (शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए), **विधि ाश्री**-(विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए)

5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं. इनके लिए कम से कम 100 पृष्ठों की किसी एक विषय पर लिखि पाण्डुलिपि जो 2016 के बाद लिखी गई हो, प्रकाशित/अप्रकाशित हो, पर दिया जाएगा. प्रत्येक के लिए दो हिन्दी साहित्य सेवी प्रस्तावक का होना आवश्यक है.

विशेषः 1. प्रत्येक वर्ग के लिए दिये गये विभिन्न सम्मानों के लिए उत्कृष्ठ किसी एक का ही चयन किया जाएगा। 2. उपाधियों के लिए चयन त्रिस्तरीय निर्णायक मंडल द्वारा किया जाएगा. 3. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ में एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका भेजना होगा। 4. क्रम संख्या एक के लिए सहयोग राशि रुपये 100/ मात्र तथा क्रम संख्या 2 से 5 के लिए रुपये 500/ सहयोग अपेक्षित है। 5. सभी आयु वर्ग में शामिल प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज मासिक की वार्षिक सदस्यता (रुपये 150/ निशुल्क) प्रदान की जायेगी। 6. सभी वर्ग में विजयी प्रतिभागियों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की साधारण सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी। 7. क्र.सं. 2 से 5 तक के सभी प्रतिभागियों को संस्थान द्वारा प्रकाशित रुपये 500/ तक की पुस्तकें उपहार स्वरुप प्रदान की जायेगी। 8. सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट/ध नादेश/ सीधे खाते में (आन लाईन/ऑफ लाईन) **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से 'सचिव **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद**' के नाम से खाता संख्याः **538702010009259** आईएफएससी कोड–**यूबीआईएन–0553875** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. 9. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. 10. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. सम्मान डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा. 11. अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार करना संभव नहीं होगा। 12. किसी प्रकार के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद(प्रयागराज) होगा. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथिः 15 नवम्बर 2019

संपर्क कार्यालयः

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, श्याम डी.जे., लक्सों कंपनी के सामने, रामचन्द चन्द्र मिशन रोड, मुंडेरा, धूमनगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज)–211011, ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com, 9335155949

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण 1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर 2. बिक्री की व्यवस्था 3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था 4.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

ई–मेलः sahityaseva@rediffmail.com

'आओ चले शिखर की ओर'
बाल अनुभूतियों की सहज एवं प्रेरक अभिव्यक्ति

-डॉ० प्रवीणा देवी

'क्रीडन्तौ पुत्रैर्नृप्तृभिमोद्मानौ स्वे गृहे।।'' ऋ.-१०/८५/४२ ऋग्वेद कहता है कि हे गृहस्थ! तुम पुत्र और नातियों के साथ खेल कूदकर उत्तम गृह वाले आनन्दित होकर गृहाश्रम में प्रीतिपूर्वक वास करो.

प्रस्तुत मन्त्र में बच्चों की महत्ता को दर्शाया गया और सच बात तो यह ही है कि यदि बच्चे न हों, तो मानव अध ूरा है इसीलिये विवाह संस्कार में 'सप्तपदी' में पांचवा पग प्रजा के लिए रखाया जाता है और योग्य संतान की आकांक्षा की जाती है. अथर्व.३/२३/२ में 'पुमांस पुत्रं जनप' सुयोग्य सन्तान ही पैदा करो, कहा गया है। नानाविध बालकों का वर्णन प्राप्त होता है. पर यहां तो बच्चे तो बच्चे ही हैं, उनके मनोभावों को कवि ने अपनी काव्य प्रातिभ तूलिका से सजाया संवारा है. इस बाल संग्रह को आद्योपान्त आलोडन-विलोडन से ज्ञात होता है.

साहित्यकार आचार्य विश्वनाथ ने अपने साहित्य दर्पण में लिखा है 'कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा' अर्थात् मनुष्यों के अन्दर काव्य लिखने का भाव बहुत कम ही दृष्टिगत होता है, अच्छी कविता लिखना और मानसिक भावों को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त कर देने की क्षमता विरले ही मनुष्यों में पायी जाती है. इसी प्रकार हिन्दी कवि ने ठीक ही लिखा है-

कविता लिखना आसान नहीं है पूछो इन फनकारों से। ये तो लोहा काट रहे हैं कागज की तलवारों से।।

वास्तव में कविता लिखना एक कला है, फन है तथा अच्छा फनकार या कलाकार वही होता है, जो अपने फन में माहिर हो तथा उसमें पूर्णता प्रदान करते हुए अपनी रचना धर्मिता को ठीक से निभा सके. मनोभावों की अभिव्यक्ति एक कठिन कार्य है तथा उसे काव्यात्मक पंक्तियों का रूप प्रदान करना कठिनतर है. इसमें भावुक हृदय श्री कैलाश त्रिपाठी जी ने पर्याप्त सफलता पाई है. 'इनसे सीखो' शीर्षक कविता बालकों के मनों में अपनी घुसपैठ बनाती है. 'बादल कहते तुम उदार बन, सबको सुखी बनाना सीखों।/...रोज सबेरे सूरज कहता, जग को रोशन करना सीखो।. ...झर झर झरते झरने कहते, जीवन सरल बनाना सीखो।

अन्तिम पंक्तियां अपनी अलंकारिक छवि को भी दर्शाती है जिससे प्रभावित हुये कोई नहीं रह सकता है. युवा मन के लिये कितनी प्रभावी पंक्तियां है.

'माँ' शीर्षक बच्चों के अन्तर्मन को छुये भी न हां यह कैसे हो सकता है-

'माँ' की महिमा अमित है, अनुपम होता उसका प्यार।/पालन पोषण करे खुशी से, सहती रहती कष्ट अपार।/सुख देती है उसकी छाया, हर लेती है सभी विकार।

इसी प्रकार 'पुस्तके', झण्डा हम फहरायेंगे, अपना विद्यालय, सूरज, निकला, समय, घड़ी, बिल्ली मौसी, कुड़कूँ-कूँ, पतंग, हमारा भारत देश, फूल, पक्षी दीपावली वृक्ष लगायें, दीपक, वर्षा आदि सभी कवितायें बच्चों को, युवकों को बहुत अधिक प्रभावित करने वाली है. 'जीवन में कुछ करना है', जो अपने कदम बढ़ाते है, गतिमान रहें, आओ चलें शिखर की ओर, जैसी कवितायें जीवन में कर्मठता, अनुशासनप्रियता, ऊर्ध्व लक्ष्योन्मुखता, श्रम परायणता, गतिशीलता समयबद्धता, संकल्पनात्मकता जैसे सद्गुणों को अपनाने की प्रेरणा देती हैं-

'जीवन में कुछ करना है, ध्यान लगाकर पढ़ना है।/ अपना निश्चित लक्ष्य बनायें, संकल्पों में दृढता लायें।/बाधाओं से हार न मानें, अपनी ताकत को पहचानें। बढ़े चले शिखर की ओर, आओ चलें शिखर की ओर।

तितली, वर्षा, वृक्ष लगायें, फूल पक्षी, नाच रहा है वन में मोर, जल, धरा को हरा बनायें सब्जियां, बूंद बूंद है कीमती, करें सदा हम जल से प्यार, फलों को जानें जैसे कवितायें लिखकर कवि ने पर्यावरण संरक्षण पर बल देकर बच्चों को भी प्रकृति-प्रेमी बनाने का सराहनीय प्रयत्न किया है-

दामिनि दमक रही अम्बर में,
झम झम वारिष है घनघोर।
टर्र-टर्र मेढ़क टर्राते,
नाच रहे हैं वन में मोर।।

समय का मूल्य, घड़ी, अनुशासन, उठो सवेरे जैसे शीर्षक हमें 'उन्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वशनिनबोधत' सद्वाक्य का बोध ा कराते हैं यह न केवल युवकों बल्कि मानव मात्र को भी जाग्रत करने वाली कवितायें है. अपना विद्यालय, झण्डा हम फहरायेंगे, हमारा भारत देश, मीठी वाणी, हिन्दी, आओ हम गणतन्त्र मनायें जैसी कवितायें सबके अन्दर राष्ट्र प्रेम की भावना को परिपूरित करती हैं. पुस्तकें, बिल्ली मौसी, कड़कूँ-कूँ, पतंग, दीपावली, दीपक, होली आई, बच्चों ने छुट्टी आज मनाई, रेल चलायें, बच्चे

हमें खिलाते हैं, गुब्बारे वाला आया जैसी कवितायें मनोरंजनात्मकता को प्रदर्शित करती है.

गुब्बारे लेने को आतुर,
बच्चे मचल रहे हैं।
लेकर वे गुब्बारे सुन्दर,
प्रमुदित होकर उछल रहे हैं।
बच्चों का मन हर्षाया फिर,
गुब्बारे वाला आया।

यह कविता किस बच्चे के अर्न्मन को स्पर्श नहीं कर रही है अर्थात् सभी को प्रभावित कर रही है. इतना ही नहीं कवि ने सांस्कृतिक आदर्शो, नैतिक उच्च भावनाओं को भी अपनी कविता में संजोया है. माँ, श्रम, शबरी, ध्यान रखना विशेष, अनुशासन, सबको प्यारे बच्चे हैं, आज हमें माँ, श्रम, शबरी, ध्यान रखना विशेष, अनुशासन, सबको प्यारे बच्चे हैं, आज हमें माँ ऐसा वर दो, हमारी दादी, बच्चों अच्छी बातें सीखों, हलवाई जैसे कवितायें आदर्श की भूमि में स्थापित शिष्टाचार, संस्कार, प्रेम, आदर जैसे सद्गुणों का विकास करती है. 'माँ' शीर्षक कितनी अधिक कृतज्ञता को ज्ञापित करता है. पढ़ने के उपरान्त ज्ञात होता है.

अगणित है माँ के उपकार,
पहुंचाती खुशियों के द्वार।
ऋणी रहा माँ का संसार,
नहीं हुआ कोई उद्धार।।

'हमारी दादी' में वृद्धजनों के प्रति अपार लगाव, श्रद्धा व प्रेम के दर्शन करते हैं. विस्तारमय से सभी उद्धरण नहीं दिये जा सकते हैं पर समासतः यह कहा जा सकता है कि 'भावुक' जी यह रचना बच्चों, युवाओं में लोकोपयोगी सद्गुणों, सद्विचारों को प्रस्फुटित करती है. अधिक नहीं इतना तो मैं कह ही सकती हूँ कि आपने सच्चे कवि के समान अपने आस-पास के यथार्थ को देखा, व्यावहारिकता को पहचाना, समाज से जुड़कर उसके सुख दुःख को समझकर उसे शब्दों में बांध दिया और वह भी बाल, युवा के अन्तर्मन को टटोलकर जो कवितायें लिखीं, वह वास्तव में प्रेरणाप्रद हैं अतः यह कहा जा सकता है-

जहाँ न जाये रवि, वहाँ जाये कवि।

भारत में आँर्थोराइटिस की बढ़ती पृष्ठ 28 का शेष......

'इलैक्ट्रोथेरिपि' भी कहा जाता है. किंतु यह थेरेपि अभी भारत में पूर्णतया विकसित नही है. इस पद्धति से घुटनों के जोड़ों में जम रहे ग्रीस को पिघलाया जा सकता है. इससे गठिया रोग समाप्त हो जाता है.

मनुष्यों के लहूं (खून) में 18 मुख्य अणु (सेल्स) होते है. जिनमें लाल-नारंगी पृष्ठ और स्वेत अणु विशेष हैं. नारंगी और लाल रंग की काँच की शीशी धूप में रख दें उसमें अलसी का तेल भर दे. लगभग सात दिन तक धूप में रखे. इस प्रकार-तेल में अल्ट्राकिरणें समाहित हो जायेगी. इस तेल के दो भाग तेल में दो मिली० तारपीन तेल मिलाकर मालिस करे. आइंना (मूंह देखने वाला) के फोकस से धूप की किरणों से सेक करें. ऑर्थराइटिस का दर्द शान्त हो जाएगा. कमर दर्द में नारंगी शीशी के तेल का प्रयोग करें! ''रियूमेटाइड ऑर्थराइटिस'' घुटनों कमर रीढ़ की हड्डियों का दर्द कलाई के जोड़ों के दर्द में नारंगी और लाल शीशी का तेल समान भाग मिलाकर (2+2 मिली०) दो मिली० तारपीन तेल मिलाकर प्रयोग करें. मासपेशियों के दर्द में भी यह प्रक्रिया कारगर है. साथ में ग्लूकोसमाईन और गैनोड्रमा औषधि का सेवन आवश्यक है. मालिस धूप में बैठकर 30 मिनट करना चाहिए. रोग 3—4 माह के उपचार से जड़-मूल से समाप्त हो जाता है. दोबारा रोग नही होता. अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे.

-डॉ० अरुण कुमार आनन्द, गणेश कालोनी स्ट्रीट नं० 3, बृजनगर, सीतारोड, चन्दौसी- 202412, संभल, उ०प्र०

लघु कथा प्रतियोगिता-2019

इस प्रतियोगिता में देशी-विदेशी कोई भी हिन्दी सेवी सहभागी हो सकता है। यह प्रतियोगिता तीन चरणों में सम्पन्न होगी। अंतिम चरण में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी को रुपये 5000/ प्रदान किए जाएंगे। अंतिम चरण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा। सभी प्रतिभागियों की रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित भी किया जा सकता है। कृपया फोन कर जानकारी ना मांगे, अणुडाक (ई-मेल) या व्हाटसएप पर आवेदन करें पूरा विवरण नियम एवं शर्तो सहित प्रेषित कर दिया जाएगा।

नियम एवं शर्ते

01- प्रतिभागी को एक लघुकथा जिसकी शब्द सीमा अधिकतम 300 (तीन सौ शब्दों) से अधिक की न हो मौलिकता के प्रमाण पत्र के साथ भेजनी होगी।

02- प्रथम चरण में इन लघुकथाओं को एक पुस्तकाकार में प्रकाशित किया जा सकता है। जिसकी एक प्रति साधारण डाक से प्रतिभागी को भी भेजी जाएगी।

03- पाठकों की राय के आधार पर सर्वश्रेष्ठ दस का चयन किया जाएगा। जो द्वितीय चरण के प्रतिभागी होगें।

04- द्वितीय चरण के प्रतिभागियों की लघुकथा को पाठकों की राय एवं तीन सदस्यीय निर्णायक मंडल के निर्णय के आधार पर सर्वोच्च एक का चयन किया जाएगा।

05- विजेता को फरवरी 2020 में आयोजित होने वाले 18वें साहित्य मेला के सुअवसर पर यह विजेता का प्रमाण पत्र व निर्धारित राशि प्रदान की जाएगी।

06- प्रतिभागी को लघुकथा के साथ एक फोटो, नाम, पिता का नाम, जन्म तिथि, योग्यता तथा रुपये दो सौ का धनादेश/डीडी, अथवा युनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा से 'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद' के नाम से खाता संख्याः **538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

आवेदन की अंतिम तिथि 15 फरवरी 2020

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सो कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

सं०: 9335155949 sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

विशेषः कृपया मोबाइल पर संपर्क ना करें।

नियम एवं शर्तो में आंशिक परिवर्तन संभव है।

काव्य सम्राट प्रतियोगिता-2019

इस प्रतियोगिता में किसी भी उम्र का कोई भी हिन्दी प्रेमी/हिन्दी भाषी प्रतिभागी बन सकता है। यह प्रतियोगिता तीन चरणों में सम्पन्न होगी। अंतिम चरण में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी को ही काव्य सम्राट की उपाधि व नगद 11000/रुपये प्रदान किए जाएंगे। अंतिम चरण के सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा. सभी प्रतिभागियों की रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित भी किया जा सकता है।

नियम एवं शर्तें:

01. इस प्रतियोगिता के लिए उम्र की कोई सीमा निर्धारित नहीं है।

02. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रथम चरण में शामिल सभी रचनाकारों की रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित किया जा सकता है। जिसकी एक प्रति साधारण डाक से प्रतिभागी को भी प्रेषित की जाएगी।

03. पाठकों की राय के आधार पर द्वितीय चरण के लिए केवल 15 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. त्रिस्तरीय निर्णायक मंडल द्वारा रचनाओं का स्तर, शैली, शब्द रचना को देखकर तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए 11 रचनाकारों का चयन किया जाएगा.

04. तृतीय चरण में चयनित रचनाकारों को स्वयं उपस्थित होकर काव्य पाठ करना होगा. तीसरे चरण के सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र दिया जायेगा. प्रत्येक चरण में विजयी प्रतिभागियों को सूचना मोबाइल संदेश/ व्हाटसऐप/ ईमेल से दी जाएगी.

05. सर्वश्रेष्ठ/विजेता को काव्य सम्राट की उपाधि व नगद राशि व उपहार दिया जाएगा.

06. प्रतिभागी को मौलिकता दर्शाते हुए एक रचना के साथ एक फोटो, नाम, पिता का नाम, जन्म तिथि, पता, ईमेल/व्हाटसएप नंबर, दूरभाष भेजनी होगी तथा रुपये दो सौ का धनादेश/चेक/डीडी अथवा युनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा से 'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद' के नाम से खाता संख्या: 538702010009259 में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 फरवरी 2020

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

ह्वाटसएप नं0: 9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा [illegible] से मुद्रित [illegible] मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया
[illegible] पंजीयन संख्या [illegible] सम्पादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी